Shri Kamkala Kali Mantra Sadhana

श्रीकामकलाकाली मंत्र साधना रहस्य

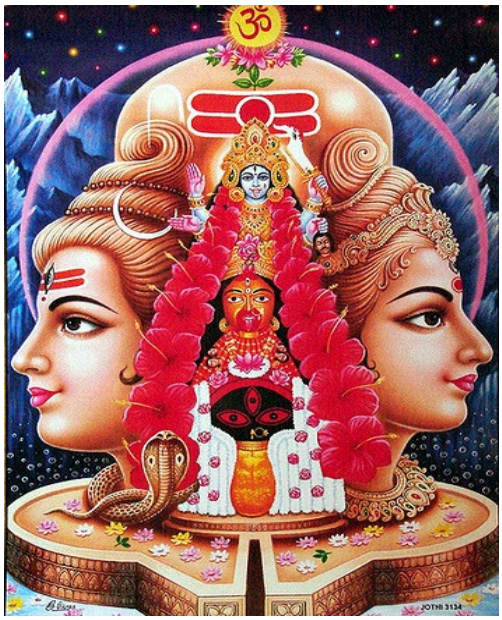

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

'काली' अर्थात् काल की शक्ति। भगवती काली का दशमहाविद्याओं में प्रथम स्थान है। शिव के साथ शिवा, महाकाल के साथ महाकाली, रुद्र के साथ रुद्राणी, भैरव के साथ भैरवी तथा विष्णु के साथ महालक्ष्मी के रूप में साधकजन नित्य इनकी उपासना करते हैं। महाकाली परब्रह्म परमात्मा की विराट् शक्ति है, जो विभिन्न रूपों में विविध लीलायें करती हैं। इन्हीं की शक्ति की सहायता से ब्रह्मा विश्व की उत्पत्ति करते हैं, विष्णु जगत का पालन करते हैं तथा शिव जगत का संहार करते हैं। अर्थात् ये ही सृजन पालन एवं संहार करने वाली आद्या शक्ति हैं। 'ऋग्वेद' में भगवती कहती हैं- 'मैं रुद्र, वसु, आदित्य, ग्रह, नक्षत्र और विश्वदेवों के रूप में विचरण करती हूं।' मधुकैटभ का वध करने हेतु ब्रह्मा विष्णु ने इन्हीं योगमाया की स्तुति की थी।

वैसे तो एक बालक अपनी माता को विनयपूर्वक कभी भी पुकार सकता है। परन्तु रात्रिकाल में इनकी उपासना शीघ्र फलीभूत होती है। अमावस्या की रात्रि में 12 बजे का समय सर्वोत्तम है। इस महारात्रि के समय समस्त सृष्टि निद्रामग्न होती है तथा कालरात्रि अपनी विशिष्ट शक्तियों के साथ जाग्रत अवस्था में रहती हैं। यह समय महानिशा के नाम से जाना जाता है। श्मशान स्थल इनका प्रमुख वास माना गया है। यहां पर रक्षाबन्धन कर जप करने से कई प्रत्यक्ष अनुभूतियां होती हैं तथा त्वरित फल प्राप्त होता है। निष्ठापूर्वक साधना करने से भगवती काली के कई प्रकार के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष अनुभवों का साक्षात्कार होता है। जैसे- स्वप्न में सांवलें सलोने, महाकृष्ण, नीलवर्ण स्वरूप के दर्शन होना या घुंघरु की छमछम की ध्वनि सुनाई देना, दैवीय सुगंध आना आदि। साधक अपनी श्रद्धा एवं योग्यता के अनुसार ही भगवती का साक्षात्कार प्राप्त करता है।

भगवती महाकाली की उपासना योग्य गुरु के संरक्षण में अति सावधानी पूर्वक करनी चाहिये, क्योंकि इनके स्वरूप की भांति इनका स्वभाव भी उग्र है। प्रत्येक शनिवार की भांति किसी कारणवश इनकी पूजा एवं दर्शन हेतु एक शनिवार को मैं इनके मन्दिर में न जा सका। उसी रात को इन्होंने अपने क्रोध का प्रभाव दिखा दिया था। क्षमायाचना उपरान्त् ही ये शान्त हुई थी। ऐसे कई अनुभव प्राप्त हैं। महाशक्ति काली के रूप, नाम तथा

भेद असंख्य है। फिर भी प्रमुख रूपों में चिन्तामणिकाली, स्पर्शमणिकाली, संततिप्रदाकाली, सिद्धिकाली, दक्षिणकाली, कामकलाकाली, भद्रकाली, हंसकाली, गुह्यकाली, श्मशानकाली एवं महाकाली कही जाती हैं।

कामकलाकाली संक्षिप्त परिचय– कामकलाकाली, महामाया महाकाली का प्रमुख स्वरूप है। प्राचीन काल में इन्द्र, वरुण, कुबेर, ब्रह्मा, शिव, रावण, यम, सूर्य, चन्द्रमा, विष्णु, हनुमान आदि विशिष्ट देवताओं द्वारा भगवती कामकलाकाली की उपासना का वर्णन कामकलाकालीखण्ड में मिलता है। कामकलाकाली खण्ड के अन्तर्गत नव कालियों में दक्षिणकाली, भद्रकाली, श्मशानकाली, कालकाली, गुह्यकाली, कामकलाकाली, धनकाली, सिद्धिकाली, चण्डकाली का वर्णन आता है। इनकी उपासना वामाचार व दक्षिणाचार दोनों विधियों से सम्पन्न करने का निर्देश तंत्रशास्त्रों में है। इनकी विशिष्ट उपासना उपरान्त् साधक को षट्कर्मों सहित समस्त प्रकार के तंत्र प्रयोगों में शीघ्र सिद्धि मिलती है। वाक्सिद्धि, ज्ञानसिद्धि, धनसिद्धि, आध्यात्म सिद्धि, वैराग्यभाव तथा मोक्षलाभ इनकी उपासना से मनुष्य शीघ्र ही अर्जित कर लेता है। इस विद्या के प्रभाव से मनुष्य ग्रहों, पिशाचों, सर्पों, राक्षसों की गति को रोकने में समर्थ हो जाता है। नदी, समुद्र, वायु, अग्नि,

शत्रु की सेना एवं शत्रु का स्तम्भन कर देता है। महाकाली का विशिष्ट उपासक शत्रुसमूह के लिये साक्षात् काल के समान है।

72वीं पीढ़ी तक के पुरुष पूर्वज माने गये हैं। यदि उनका पूर्ण भाग्योदय होता है तो यह विद्या प्राप्त होती है। उस समय स्वयं को सौभाग्यशाली मानकर गुरु के चरणों का स्पर्श कर बिना विचारे सर्वस्व दान कर देने पर भी यह विद्या प्राप्त हो, तो प्राप्त कर लेनी चाहिये। करोड़ों जन्मों में अर्जित पुण्य के प्रभाव से ही यह विद्या प्राप्त हो सकती है। एक ओर प्राणदान और दूसरी ओर इस विद्या का दान; दोनों को यदि तुला पर रखा जाये तो इसका दान भारी पड़ता है। इस विद्या को किसी भी काल या तिथि में ग्रहण किया जा सकता है। शुक्रास्त, मलमास आदि का भी कोई दोष नहीं होता।

विशेष– भगवती महाकाली का साधक, किसी स्त्री या कन्या का कभी भी निरादर न करे। सदैव उनकी सेवा अथवा सहायता को तत्पर रहे। समस्त स्त्री समाज को माता भगवती का ही अंश मानें। सम्भव हो तो अनुष्ठानकाल में असहाय कन्या या स्त्री की सेवा या भोजनादि की व्यवस्था कर दें। इससे भगवती अति शीघ्र प्रसन्न होती हैं।

नित्य रात्रिकाल में 21, 31, 41, या 51 सरसों के तेल के दीपक प्रज्जवलित कर भगवती को अर्पित करने से विशेष लाभ मिलता है।

रुद्रसूक्त, पुरुषसूक्त या कामनानुसार स्तोत्र के द्वारा पारद शिवलिंग का प्रचलित सामग्रियों से अभिषेक करने से साधना सम्बन्धी समस्त विघ्न समाप्त होते हैं एवं कार्य शीघ्र सिद्ध होता है।

श्मशान या काली मन्दिर में भगवती काली की प्रतिमा या मूर्ति को आवश्यकतानुसार पुनः रंगादि करवाकर वस्त्र, आभूषण, त्रिशूल, नैवेद्य आदि अर्पित करने से भगवती का कृपा प्रसाद प्राप्त होता है।

सच्चे गुरु के माध्यम से एक अटल साधक निःसन्देह भगवती काली को प्रसन्न कर सकता है, बिना किसी जीव का वध किये। यह मेरा विश्वास एवं सत्य अनुभव है। मैंने सदैव दक्षिणमार्ग से ही साधकजनों को भगवती काली की दीक्षा दी है। समय एवं भाग्यानुसार साधकजनों को सफलता प्राप्त हुई है, साथ ही अनेक दिव्य अनुभवों का भी साक्षात्कार हुआ है। स्थानशुद्धि, देहशुद्धि, मनशुद्धि पश्चात् निर्जनस्थान, शिवमन्दिर, श्मशान, शक्तिमन्दिर, सिद्धपीठ अथवा अपने निवास स्थल के एकान्त एवं स्वच्छ स्थान पर भगवती की प्रतिमा या यंत्र की प्राणप्रतिष्ठा कर गुरु से समस्त गुप्त नियमों की जानकारी प्राप्त कर साधना आरम्भ करें।

पूजा के आदि एवं अन्त में काली कवच का पाठ अवश्य करना चाहिये। इनके साथ भगवान मृत्युंजय, क्रोध भैरव या शिव के अन्य स्वरूप का जप अनिवार्य है। गुरु, गणेश, शिव, दुर्गा, अष्टभैरव का पूजन कर भगवती कामकलाकाली का पंचोपचार पूजन इस प्रकार करें-

1- ॐ क्लीं भगवत्यै कामकलाकाल्यै गन्धं समर्पयामि नमः।

2- ॐ क्लीं भगवत्यै कामकलाकाल्यै पुष्पं समर्पयामि नमः।

3- ॐ क्लीं भगवत्यै कामकलाकाल्यै धूपं आघ्रापयामि नमः।

4- ॐ क्लीं भगवत्यै कामकलाकाल्यै दीपं दर्शयामि नमः।

5- ॐ क्लीं भगवत्यै कामकलाकाल्यै नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीकामकलाकालीमंत्रस्य महाकाल ऋषिः, वृहती छन्दः, कामकलाकाली देवता, क्लीं बीजं, हूं शक्तिः भगवती कामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

षडंगन्यास- क्लीं का हृदयाय नमः। क्रीं म शिरसे स्वाहा। हूँ क शिखायै वौषट्। क्रों ला कवचाय हुं। स्फ्रें का नेत्रत्रयाय वौषट्। कामकलाकाली ली अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि कुरु चित्तैकतानताम्। उद्यद्घनाघना श्लिष्यज्जवाकुसुमसन्निभाम्।। मत्तकोकिलनेत्राभां पक्वजम्बूफलप्रभाम्। सुदीर्घप्रपदालम्बि विस्रस्तघनमूर्द्धजाम्।। ज्वलदंगारवच्छोण नेत्रत्रितय भूषिताम्। उद्यच्छारदसम्पूर्ण चन्द्रकोकनदाननाम्।। दीर्घदंष्ट्रायुगो दंचद्विकरालमुखाम्बुजाम्। वितस्तिमात्रनिष्क्रान्त ललज्जिह्वा भयानकाम्।। व्यात्ताननतया दृश्यद्वात्रिंशद्दन्त मण्डलाम्। निरन्तरं वेपमानोत्तमांगां घोररूपिणीम्।। अंसासक्तनृमुण्डासृक् पिबन्तीं वक्रकन्धराम्। सृक्कद्वन्द्वस्रवद्रक्त स्नापितोरोजयुग्मकाम्।। उरोजाभोगसंसक्त सम्पतद्रुधिरोच्चयाम्। सशीत्कृतिध्यन्तीं तल्लेलिहानरसज्ञया।।

बीज मंत्र– 'स्फ्रें।'

त्रैलोक्याकर्षणमंत्र– 'क्लीं क्रीं हूँ क्रों स्फ्रें कामकलाकालि स्फ्रें क्रों हूँ क्रीं क्लीं स्वाहा।'

त्रैलोक्याकर्षण मंत्र 18 अक्षरों का है। इस मंत्र के स्मरण मात्र से समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती है। यह मंत्र सर्वार्थसाधक है। इनका विशिष्ट साधक दूसरे प्रजापति के समान सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

कामकलाकालि आकर्षणमंत्र – 'ॐ क्लूं क्लीं ह्रीं हूं क्रों श्रीं आं ऐं क्रीं कामकलाकालि सर्वाकर्षिणि अमुकीं आकर्षय स्वाहा।'

इस मंत्र से जल को अभिमंत्रित कर बायें हाथ से पीये और उससे अपना मुख भी धोयें। इसके प्रभाव से जो जो स्त्रियां साधक को देखती हैं, वे मंत्रमुग्ध हो जाती हैं।

कामकलाकाली गायत्री– 'ॐ अनंगाकुलायै विद्महे मदनातुरायै धीमहि तन्नः कामकलाकाली प्रचोदयात्।'

देवता की प्रसन्नता के लिये देवता की गायत्री का भी सामर्थ्यानुसार जप अवश्य करना चाहिये। भगवती काली के साथ कार्य एवं परिस्थितिनुसार भैरव या शिव का जप अवश्य करना चाहिये–

षड्क्षरी मंत्र– 'ॐ नमः शिवाय।'

दशाक्षर मृत्युंजय मंत्र– 'ॐ अमृत मृत्युंजयाय नमः।'

दशाक्षर रुद्रमंत्र– 'ॐ नमो भगवते रुद्राय।'

शरभसालुव मंत्र– 'ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहसि प्राण ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।'

क्रोधभैरव मंत्र– 'ॐ हुं वज्र फट् क्रुं क्रों क्रुं क्रुं हुं हुं फट्।'

पशुपति मंत्र– 'ॐ श्लीं पशुं हुं फट्।'

अघोरास्त्र मंत्र– 'ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्।'

स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र– 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।'

महाकालसंहिता में अनेक सिद्धपुरुष, ऋषि मुनि एवं देवताओं द्वारा भगवती कामकलाकाली की उपासना का वर्णन मिलता है। जिनका वर्णन निम्नवत् हैं–

मरीचि उपासित श्रीकामकलाकालीमंत्र– विनियोग– ॐ अस्य मंत्रस्य श्री कर्दम ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, ह्रीं शक्ति, ह्रूं कीलकं, श्रीभगवतीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं क्लीं ह्रूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें क्रों हौं क्षौं आं स्फ्रें स्वाहा।'

कपिलोपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीसनक ऋषिः, प्रतिष्ठा छन्दः, श्रीकामकला काली देवता, ग्लूं शक्तिः, ग्लूं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'ह्रीं फ्रें क्रों ग्लूं छ्रीं स्त्रीं हूं स्फ्रें खफ्रें ह्सखफ्रें क्ष्रौं स्हौः फट् स्वाहा।'

हिरण्याक्ष उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्री रुचि ऋषिः, उष्णिक छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, खफ्रें शक्तिः, रक्ष्रीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'खफ्रें रह्रीं रज्रीं रक्रीं रक्ष्रीं रछ्रीं रफ्रीं ह्स्खफ्रें फट्।'

लवणासुर उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीअथर्वा ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, फ्रें शक्तिः, क्लीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'ह्रीं खफ्रें हूं स्फ्रें कलीं छ्रीं स्त्रीं फ्रें स्वाहा।'

दत्तात्रेय उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीवसन्तवटुक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- ' ॐ ऐं छ्रीं फ्रें क्लीं स्त्रीं स्फ्रों हूं ह्रीं।'

उत्तंक उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, सुतल छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, हूं शक्तिः, श्रीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'ऐं ओं फ्रें ख्फ्रें ह्स्फ्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं नमः (हूं) स्वाहा।'

कौशिक उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः, शक्वरी छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, क्लीं शक्तिः, स्फ्रों कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'हूं ह्रीं फ्रें नमो विकरालायै क्लीं ख्फ्रें स्फ्रें नमः फट्।'

और्व उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीवत्स ऋषिः, त्रिवृत् छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, क्रों शक्तिः, फ्रें कीलकं, ह्रीं बीजं, श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'ह्रीं ह्रीं हूं स्त्रीं फ्रें भगवत्यै कामकलाकालिकायै ओं ऐं क्रों क्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रें स्फ्रें फट् फट् स्वाहा।'

बलि उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीकात्यायन ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीकामकलाकालीकाली देवता, स्त्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'ह्रीं स्फ्रें हूं ख्फ्रें क्लीं ह्स्फ्रें।'

संवर्त्तो उपासित श्रीकामकलाकालील मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीअत्रि ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, ह्क्षम्लै शक्तिः, क्षरह्रीं तत्त्व श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'क्लीं श्रीं ह्रीं हूं छ्रीं फ्रें ख्फ्रें क्षूं ग्लूं हूं हौं रफ्रें क्रों क्रीं ओं ऐं।'

नारद उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र– विनियोग– ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीविरूपाक्ष ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, ह्रीं बीजं, शक्तिः हूं, शक्तित्त्व श्रीं, क्लीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'ओं ऐं क्लीं स्फ्रें ह्रीं ख्फ्रें छ्रीं ह्स्फ्रीं स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें हूं स्फ्ल्क्षूं फट् स्वाहा।'

गरुड उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र– विनियोग– ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीप्रचेता ऋषिः, सुतल छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, ह्स्फ्रें बीजं, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, क्लीं तत्त्व श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'स्हजहलक्षम्लवनऊं ह्रीं सग्लक्षमहरह्रूंछ्रीं क्वलह्रझकह्रनसक्लईं घ्रीं स्हजहलक्षम्लवनऊं स्त्रीं क्लक्षसहमव्य्रऊं फ्रें फ्लक्षह्रस्हव्यऊं ह्रसलहसकह्रीं फट् नमः स्वाहा।'

परशुराम उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीकश्यप ऋषिः, प्रतिष्ठा छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, फ्रें बीजं, श्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'श्रीं ह्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं क्रीं फट्।'

भार्गव उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, शक्वरी छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, क्रों बीजं, ग्लूं शक्तिः, आं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र- 'ॐ आं क्रों हौं क्ष्रूं ग्लूं फ्रें स्त्रीं छ्रीं स्वाहा।'

सहस्त्रबाहु उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य श्री सम्मोहन ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, रक्ष्त्रब्रभ्रध्रम्लऊं बीजं, र्फ्रें शक्तिः, र्फ्रीं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'ऐं क्रों स्फ्रों फ्रें ख्फ्रें ह्स्फ्रीं ह्स्ख्फ्रें फट् फट् फट् नमः स्वाहा।'

पृथु उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र– विनियोग– ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीवीतहव्य ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, द्रां बीजं, क्रीं शक्तिः, उं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'क्लीं स्फ्रें स्फ्रें क्लीं फट्।'

हनुमान उपासित श्रीकामकलाकाली मंत्र– विनियोग– ॐ अस्य मंत्रस्य श्रीसनातन ऋषिः, वृहती छन्दः, श्रीकामकलाकाली देवता, फ्रीं बीजं, व्रीं शक्तिः, ज्रूं कीलकं श्रीकामकलाकाली प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र– 'ॐ आं ऐं ओं ईं ओं ह्रीं हूं श्रीं क्लीं कालि करालि विकरालि फट् फट् फट्।'

कामकलाकालि शताक्षरमंत्र– 'ह्रीं क्लीं हूं नमः कामकलाकालिकायै ऐं क्रों श्रीं क्रीं ह्रीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें सकच नरमुण्ड कुण्डलायै हस्खफ्रीं

हस्खफ्रूं हस्खफ्रें हस्खफ्रैं हस्खफ्रों महाविकरालवदनायै महाप्रलयसमयब्रह्माण्ड निष्पेषकरायै र्‌ह्रीं र्‌श्रीं र्‌फ्रें वूः र्‌स्फ्रों हूं हूं हूं फट् फट् फट् भयंकररूपायै ह्क्ष्म्लै लक्षों क्ष्र्‌ह्रीं क्ष्रीं स्त्रीं रक्षश्रीं खं रध्रें सैं टं टं टं ठं ठं ठं फें फें नमः स्वाहा।'

श्रीकामकलाकालि सहस्राक्षर मंत्र- विनियोग- ॐ अस्य श्रीकामकलाकालि सहस्राक्षरमंत्रस्य कालाग्निरुद्रस्य ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीकामकलाकालिदेवता, हूं बीजं, क्लीं कीलकं, स्फ्रों शक्तिः, तत्त्व शृणि भगवतीकामकलाकालि कृपा प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्- असिं त्रिशूलं चक्रं च शरमंकुशमेव च। लालनं च तथा कर्त्रीमक्षमालां च दक्षिणे।। पाशं च परशुं नागं चापं मुद्गरमेव च। शिवापोतं खर्परं च वसासृङ्मेदसान्वितम्।। लम्बत्कचं नृमुण्डं च धारयन्तीं स्ववामतः। विलसन्नुपुरां देवीं ग्रथितैः शवपंजरैः।।

मंत्र- "ओं नमो भगवत्यै कामकलाकालिकायै ओं ओं ओं ओं ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं हूं हूं हूं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं संहारभैरव सुरतर सलोलुपायै क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों हौं हौं हौं हौं हौं फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें ख्फ्रें ख्फ्रें ख्फ्रें ख्फ्रें ख्फ्रें क्षूं क्षूं क्षूं क्षूं क्षूं स्फ्रों स्फ्रों स्फ्रों स्फ्रों स्फ्रों स्हौः स्हौः स्हौः स्हौः स्हौः ग्लूं ग्लूं ग्लूं ग्लूं ग्लूं क्षौं क्षौं

क्षौं क्षौं क्षौं फ्रों फ्रों फ्रों फ्रों फ्रों क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं जूं जूं जूं जूं जूं क्लूं क्लूं क्लूं क्लूं क्लूं प्रकटविकट दशनविकराल वदनायै क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं ब्लौं ब्लौं ब्लौं ब्लौं ब्लौं क्षूं क्षूं क्षूं क्षूं क्षूं ट्रीं ट्रीं ट्रीं ट्रीं ट्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं हभ्रीं हभ्रीं हभ्रीं हभ्रीं ह्रभ्रीं स्हें स्हें स्हें स्हें स्हें घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं सृष्टिस्थिति संहारकारिण्यै मदनातुरायै क्रैं क्रैं क्रैं क्रैं क्रैं थ्रीं थ्रीं थ्रीं थ्रीं थ्रीं द्रीं द्रीं द्रीं द्रीं द्रीं ठौं ठौं ठौं ठौं ठौं ब्लूं ब्लूं ब्लूं ब्लूं ब्लूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं फहलक्षां फहलक्षां फहलक्षां फहलक्षां फहलक्षां भयंकरदंष्ट्रा युगलमुखररसनायै घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं ख्रैं ख्रैं ख्रैं ख्रैं ख्रैं क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं चफलक्रों चफलक्रों चफलक्रों चफलक्रों चफलक्रों सुरतपिनी क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं गं गं गं गं गं ह्रूः ह्रूः ह्रूः ह्रूः ह्रूः सकचनरमुण्डकृत कुलायै ल्यूं ल्यूं ल्यूं ल्यूं ल्यूं णूं णूं णूं णूं णूं हैं हैं हैं हैं हैं क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं ब्रूं ब्रूं ब्रूं ब्रूं ब्रूं स्कीः स्कीः स्कीः स्कीः स्कीः ब्जं ब्जं ब्जं ब्जं ब्जं स्हीं स्हीं स्हीं स्हीं स्हीं महाकल्पान्त ब्रह्माण्डचर्वणकरायै हैं हैं हैं हैं हैं अं अं अं अं अं इं इं इं इं इं उं उं उं उं उं स्हें स्हें स्हें स्हें स्हें रां रां रां रां रां गं गं गं गं गं गां गां गां गां गां युगभेदभिन्न गुह्यकाल्येकमूर्तिधरायै फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें खफ्रें खफ्रें खफ्रें खफ्रें खफ्रें हसफ्रीं हसफ्रीं हसफ्रीं हसफ्रीं हसफ्रीं हसखफ्रें हसखफ्रें हसखफ्रें हसखफ्रें हसखफ्रें क्षरह्रीं क्षरह्रीं क्षरह्रीं क्षरह्रीं क्षरह्रीं ह्रक्षम्लैं ह्रक्षम्लैं ह्रक्षम्लैं ह्रक्षम्लैं ह्रक्षम्लैं (जरक्रीं जरक्रीं जरक्रीं जरक्रीं जरक्रीं) रह्रीं रह्रीं रह्रीं रह्रीं रह्रीं रक्ष्रीं

रक्ष्रीं रक्ष्रीं रक्ष्रीं रक्ष्रीं रफ्रीं रफ्रीं रफ्रीं रफ्रीं रफ्रीं क्षह्रम्लव्र्यऊं क्षह्रम्लव्र्यऊं क्षह्रम्लव्र्यऊं क्षह्रम्लव्र्यऊं क्षह्रम्लव्र्यऊं शतवदनान्तरितैक वदनायै फट् फट् फट् ओं तुरु ओं मुरु ओं हिलि ओं किलिं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रः महाघोरावे कालि कापालि महाकापालि विकटदंष्ट्रे शोषिणि सम्मोहिनि करालवदने मदनोन्मादिनि ज्वालामालिनि शिवारूपि भगमालिनि भगप्रिये भैरवीचामुण्डायोगिन्यादि शतकोटिगणपरिवृते प्रत्यक्षं परोक्षं मां द्विषतो जहि जहि नाशय नाशय त्रासय त्रासय मारय मारय उच्चाटय उच्चाटय स्तम्भय स्तम्भय विध्वंसय विध्वंसय हन हन त्रुट त्रुट विद्रावय विद्रावय छिन्धि छिन्धि पच पच शोषय शोषय मोहय मोहय उन्मूलय उन्मूलय भस्मीकुरु भस्मीकुरु दह दह क्षोभय क्षोभय हर हर प्रहर प्रहर पातय पातय मर्दय मर्दय दम दम मथ मथ स्फोटय स्फोटय जम्भय जम्भय भ्रामय भ्रामय सर्वभूतभयंकरि सर्वजनवशंकरि सर्वशत्रुक्षयंकरि ओं ह्रीं ओं क्लीं ओं हूं ओं क्रों ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल कह कह हस हस राज्यधनायुःसुखैश्वर्यं देहिदेहि दापय दापय कृपाकटाक्षं मयि वितर वितर छ्रीं स्त्रीं फ्रें हभ्रीं ट्रीं भ्रीं थ्रीं प्रीं क्रीं क्लीं हां हीं हूं मुण्डे सुमुण्डे चामुण्डे मुण्डमालिनि मुण्डावतंसिके मुण्डासने ग्लूं ब्लूं ज्लूं शवारूढे षोडशभुजे सोद्यते पाशपरशु नागचाप मुद्गर शिवापोतखर्पर नरमुण्डाक्षमालाकर्त्री नानांकुशशव चक्रत्रिशूलकरवाल धारिणि स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर मम हृदि तिष्ठ तिष्ठ स्थिरा भव त्वं ऐं ओं

स्वाहा स्हौः क्लीं स्फ्रों खं खं खं खां खां खां हीं हीं हीं हूं हूं हूं जय जय विजय विजय फट् फट् फट् नमः स्वाहा।''

इस महामंत्र के प्रभाव से साधक के देह, स्थान को भगवती काली का रक्षण प्राप्त होता है। दुष्ट शत्रुदल, परकृत्या एवं सर्व व्याधियों का समूल नाश होता है। गुरु की आज्ञा प्राप्त कर माँ काली के सिद्ध मन्दिर में प्रचलित सामग्री अर्पण कर भगवती से उक्त महामंत्र का जप करने की आज्ञा मांगे। सम्भव हो तो मन्दिर में ही मंत्र के 108 पाठ कर सिद्ध कर लें और कार्य सिद्धि का आशीर्वाद मांगे। तत्पश्चात् एकान्त निवास स्थान में पूर्ण सावधानी के साथ परिस्थितिनुसार निश्चित संख्या में मंत्र का पाठ करना चाहिये। साधना के अन्तर्गत नित्य कन्या पूजन एवं सेवा करने से शीघ्र लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार की उग्र साधनाओं को गुरुमुख से विधिवत ग्रहण कर सिद्ध करना चाहिये।

श्रीकामकलाकालि प्राणायुताक्षरी मंत्र (दस हजार अक्षरी मंत्र)–

दस हजार अक्षरों वाला कामकला काली का यह महामंत्र अति उग्र व त्वरित फल प्रदाता है। संसार की समस्त सिद्धियां इस महामंत्र के भीतर समाहित हैं। अर्थात् गुरु से आज्ञा प्राप्त कर विधिपूर्वक

इस विद्या के पाठ करने से साधक के लिये त्रैलोक्य में कुछ भी असम्भव नहीं है। समस्त विकराल शत्रु, भयानक प्रेतबन्धन एवं घोर संकट में इसका जप साधक को अभय प्रदान करता है। धनलाभ, पुत्रलाभ, विद्यालाभ, यशलाभ एवं मोक्षलाभ सभी प्रकार की दुर्लभ सिद्धियां इस विद्या से सहज ही प्राप्त की जा सकती है। महाकाल ने कहा है:- हे देवि! इस विद्या एवं मंत्र से प्राप्त होने वाले फल का सम्पूर्ण वर्णन स्वयं मैं भी नहीं कर सकता। इस महामंत्र में अन्य महाविद्याओं के मंत्रों का समावेश है। जिनके द्वारा समस्त कार्यों की सिद्धि के लिये प्रार्थना की गयी है।

निर्जन एकान्त स्थान, शिवमन्दिर, कालीमन्दिर या श्मशान में तीन या पांच पाठ नित्य विधिपूर्वक रात्रिकाल में करने से एक माह के भीतर ही उच्च साधक भगवती कामकला काली का प्रत्यक्ष अनुभव करने लगता है, परन्तु साधारण साधक को इस महामंत्र से दूर ही रहना चाहिये। शक्ति, शैव या किसी भी विद्या के विशिष्ट साधक, गुरु आज्ञा उपरान्त् ही इस महामंत्र का चिन्तन करे।

मंत्र- ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें क्रों क्षौं आं स्फ्रों स्वाहा कामकलाकालि, ह्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ठः ठः दक्षिणकालिके, ऐं क्रीं ह्रीं हूं स्त्रीं फ्रें स्त्रीं ख्फ्रें भद्रकालि हूं हूं फट् फट् नमः स्वाहा भद्रकालि, ओं ह्रीं ह्रीं हूं हूं भगवति

श्मशानकालि नरकंकालमालाधारिणि ह्रीं क्रीं कुणपभोजिनि फ्रें फ्रें स्वाहा श्मशानकालि, क्रीं हूं ह्रीं स्त्रीं श्रीं क्लीं फट् स्वाहा कालकालि, ओं फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा गुह्यकालि।

ओं ओं हूं ह्रीं फ्रें छ्रीं स्त्रीं श्रीं क्रों नमो धनकाल्यै विकरालरूपिणि धनं देहि देहि दापय दापय क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षृं क्षॄं क्ष्लृं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः क्रों क्रोः आं ह्रीं ह्रीं हूं हूं नमो नमः फट् स्वाहा धनकालिके, ओं ऐं क्लीं ह्रीं हूं सिद्धिकाल्यै नमः सिद्धिकालि, ह्रीं चण्डाट्टहासनि जगद्ग्रसनकारिणि नरमुण्डमालिनि चण्डकालिके क्लीं श्रीं हूं फ्रें स्त्रीं छ्रीं फट् फट् स्वाहा चण्डकालिके नमः कमलवासिन्यै स्वाहालक्ष्मि ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मि, ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा अन्नपूर्णे।

ओं ह्रीं हूं उत्तिष्ठपुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा क्रोधदुर्गे भगवति शमय स्वाहा हूं ह्रीं ओं, वनदुर्गे ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तरतनुरूपे चट चट प्रचट प्रचट कह कह रम रम बन्ध बन्ध घातय घातय हूं फट् विजयाघोरे, ह्रीं पद्मावति स्वाहा पद्मावति, महिषमर्दिनी स्वाहा महिषमर्दिनी।

ओं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा जयदुर्गे, ओं ह्रीं दुं दुर्गायै स्वाहा, ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि

सर्वदुष्टमृगवशंकरि सर्वग्रहवशंकरि सर्वसत्त्ववशंकरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरंजिनि सर्वराजवशंकरि सर्वलोकममुं मे वशमानय स्वाहा, राजमातंगि उच्छिष्ट मातंगिनि, हूं ह्रीं ओं क्लीं स्वाहा उच्छिष्टमातंगिनि, उच्छिष्टचाण्डलानि सुमुखि देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः उच्छिष्टचाण्डलानि, ओं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ओं स्वाहा बगले।

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं धनलक्ष्मि ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः सरस्वति, आं ह्रीं हूं भुवनेश्वरि, ओं ह्रीं श्रीं हूं क्लीं आं अश्वारूढायै फट् फट् स्वाहा अश्वारूढै, ओं ऐं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ऐं ह्रीं स्वाहा नित्यक्लिन्ने, स्त्रीं क्षमकलह्रहसव्यूं जय भैरवि श्रीं ह्रीं ऐं ब्लू ग्लौः अं आं इं राजदेवि राजलक्ष्मि ग्लं ग्लां ग्लिं ग्लीं ग्लूं ग्लूं ग्लृं ग्लृं ग्लें ग्लैं ग्लों ग्लौं गलः क्लीं भ्रीं ध्रीं ऐं ह्रीं क्लीं पौं राजराजेश्वरि ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहं ग्रस स्वाहा शूलिनि, ह्रीं महाचण्डयोगेश्वरि ध्रीं थ्रीं ण्रीं फट् फट् फट् फट् फट् जय महाचण्डयोगेश्वरि।

श्रीं ह्रीं क्लीं प्लूं ऐं ह्रीं क्लीं पौं क्षीं क्लीं सिद्धिलक्ष्म्यै नमः क्लीं पौं ह्रीं ऐं राज्यसिद्धलक्ष्मि ओं क्रः हूं आं क्रों स्त्रीं हूं क्षौं ह्रां फट् सकह्रलमक्षखव्रूं म्लकह्रक्षरस्त्रीं यम्लव्रीं ग्लक्षकमह्रव्य्रऊं हह्लव्य्रकऊं मफ्रलहलहखफ्रूं म्लव्य्रवऊं म्लक्षकससहह्रूं क्षम्लब्रसहस्हक्षक्लस्त्रीं

रक्षलह्वमसहकब्रूं झसखय्रमऊं ह्वक्ष्मलीं ह्रीं ह्रीं हूं क्लीं स्त्रीं ऐं क्रौं छ्रीं फ्रें क्रीं ग्लक्षकमह्वव्य्रऊं हूं अघोरे सिद्धिं मे देहि दापय स्वाहा अघोरे।

ओं नमश्चामुण्डे करंकिणि करंकमालाधारिणि किं किं विलम्बसे भगवति, शुष्काननि खं खं अन्त्रकरावनद्धे भो भो वल्ग वल्ग कृष्ण भुजंगवेष्टित तनुलम्बकपाले ह्वष्ट ह्वष्ट हट्ट हट्ट पत पत पताकाहस्ते ज्वल ज्वल ज्वालामुखि अनलनख खट्वाधांगरिणि हाहा चट्ट चट्ट हूं हूं अट्टाट्टहासिनि उड्ड उड्ड वेतालमुखि अकि अकि स्फुलिंग पिंगलाक्षि चल चल चालय चालय करंकमालिनि नमोऽस्तु ते स्वाहा विश्वलक्ष्मि।

ओं ह्रीं क्ष्रीं द्रीं शीं क्रीं हूं फट् यंत्रप्रमथिनि खफ्रें ल्रीं ज्रीं क्रीं ओं ह्रीं फ्रें चण्डयोगेश्वरि कालि फ्रें नमः चण्डयोगेश्वरि, ह्रीं हूं फट् महाचण्डभैरवि ह्रीं हूं फट् स्वाहा महाचण्डभैरवि, ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें ऐं ह्रीं श्रीं त्रैलोक्यविजयायै नमः स्वाहा त्रैलोक्यविजये, ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हौं जयलक्ष्मि युद्धे मे विजयं देहि हौं आं क्रों फट् फट् स्वाहा जयलक्ष्मि। महाप्रचण्डभैरवि हूं फ्रों? फ्रटं हम्लब्रीं बफ्रटं ब्रकम्लब्लक्लऊं रफ्रटं महामंत्रेश्वरि, ओं ह्रीं श्रीं क्लीं हौं हूं वज्रप्रस्तारिणि ठः ठः वज्रप्रस्तारिणि।

ओं ह्रीं नमः परमभीषणे हूं हूं नरकंकालमालिनि फ्रें फ्रें कात्यायनि व्याघ्रचर्मावृतकटि क्रीं क्रीं श्मशानचारिणि नृत्य नृत्य गाय गाय हस

हस हूं हूंकारनादिनि क्रों क्रों शववाहिनि मां रक्ष रक्ष फट् फट् हूं हूं नमः स्वाहा कात्यायनि, ऐं ह्रीं श्रीं षैं सैं फैं रैं स्हौः षां मीं धूं ह्रां ह्रीं हूं हसखफ्रें शिवशक्ति समरस चण्डकपालेश्वरि हूं नमश्चण्डकपालेश्वरि।

ऐं क्रीं क्लीं पौं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं क्लीं भ्रीं ध्रीं क्लीं भ्रीं ध्रीं महासुवर्णकूटेश्वरि कमलक्षसहब्लूं श्रीं ह्रीं ऐं नमः स्वाहा सुवर्णकूटेश्वरि ऐं ह्रीं ह्रीं आं ग्लीं ईं आं अं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि ऐं ग्लूँ अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टे प्रदुष्टानां सर्ववाक्चित्तचक्षुः श्रोत्रमुखगति जिह्वास्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं क्रीं श्रीं ठः ठः ठः ठः ठः ओं ऐं हूं फट् ठः ठः ओं ग्लुं ह्रीं वार्तालि वाराहि ह्रीं ग्लुं वार्तालि वाराहि ओं चण्डवार्तालि ऐं ह्रीं श्रीं आं ग्लूं ईं वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि शत्रून् दह दह ग्रस ग्रस ईं आं ग्लुं हुं फट् जय वार्तालि ऐं ह्रीं श्रीं श्रूं स्हौः ओं ह्रीं हूं फ्रें राज्यप्रदे खफ्रें हसखफ्रें उग्रचण्डे रणमर्दिनि हूं फ्रें छ्रीं स्त्रीं सदा रक्ष रक्ष त्वं रूपं मां रूपं च जूं सः मृत्युहरे नमः स्वाहा, अः उग्रचण्डे ऐं हसखफ्रें हसखफ्रीं औं ह्रीं हसफ्रें हूं फ्रें ॐ उग्रचण्डे स्वाहा श्मशानोग्रचण्डे ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रीं हसखफ्रीं रुद्रचण्डायै रह्रीं नमः स्वाहा रुद्रचण्डे।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं चण्डकूटे ख्फ्रें ग्लक्षकमह्रव्र्यीं प्रचण्डायै नमः स्वाहा प्रचण्डे, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रें ह्रीं चण्डनायिकायै नमः त्रूं नमः स्वाहा चण्डनायिके, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रें हसखफ्रूं क्लीं नमः स्वाहा चण्डे महादेवि, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रीं चण्डवत्यै क्ष्म्लूं नमः स्वाहा चण्डवति, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रें क्षम्लकस्हरयब्रूं खफ्रीं अतिचण्डायै नमः ग्लूं नमः स्वाहा अतिचण्डे, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रें ख्फ्रीं चण्डिकायै द्रैं नमः स्वाहा चण्डिके, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रें, स्हफ्रीं क्लीं हूं क्लह्रीं कात्यायन्यै ख्फ्रें कामदायिन्यै हूं नमः स्वाहा ज्वालाकात्यायनि।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं क्लीं हूं श्रीं हभ्रीं महिषमर्दिनी श्रीं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं उन्मत्त महिषमर्दिनी ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं महामहेश्वरि तुम्बुरेश्वरि स्वाहा तुम्बुरेश्वरि, ओं ह्रीं क्लीं हूं ग्लूं आं ऐं हूं स्हौः फ्रें चैतन्यभैरवि फ्रें फ्रें स्हौः क्रों आं ऐं ग्लूं हूं क्लीं ह्रीं ओं फट् ठः ठः चैतन्यभैरवि, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं मुण्डमधुमत्यै शक्तिभूतिन्यै ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् मधुमति। वद वद वाग्वादिनि स्हौः क्लिन्नक्लेदिनि महाक्षोभं कुरु स्हौः वाग्वादिनि, भैरवि ह्रीं फ्रें ख्फ्रें क्लीं पूर्णेश्वरि सर्वकामान् पूरय ओं फट् स्वाहा पूर्णेश्वरि, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं रक्तरक्ते महारक्तचामुण्डेश्वरि अवतर अवतर स्वाहा रक्तचामुण्डेश्वरि माहेशि, ओं ह्रीं श्रीं त्रिपुरावागीश्वर्यै नमः त्रिपुरावागीश्वरि, हंसे कालभैरवि चण्डवारुणि।

ओं अघोरे हाहा घोरे घोरघोरतरे हूं सर्वशर्वशर्वे ह्रें नमस्ते रुद्ररूपे हः हः ओं घोरे, ह्रीं श्रीं क्रों क्लूं ऐं क्रौं छ्रीं फ्रें क्रीं ख्फ्रें हूं अघोरे सिद्धिं मे देहि दापय स्वाहा क्ष्रूं अघोरे, ओं ह्रीं फ्रें हूं महादिग्वीरे ऐं श्रीं क्लीं आं मुक्तकेशि चण्डाट्टहासिनि छ्रीं स्त्रीं क्रीं ग्लौं मुण्डमालिनि ओं स्वाहा दिगम्बरि।

ओं ऐं ह्रीं कामकलाकालेश्वरि सर्वमुखस्तम्भिनि सर्वजनमनोहरि सर्वजनवशंकरि सर्वदुष्टनिमर्दिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि छिन्धि शृंखला त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् जम्भय जम्भय द्विषान् निर्दलय निर्दलय सर्वान् स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिणः उच्चाटय उच्चाटय सर्ववश्यं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वं कालरात्र्यै कामिन्यै गणेश्वर्य्यै नमः कालरात्रि।

ओं ऐं आं ईं णं ईं ऐह्येहि भगवति किरातेश्वरि विपिन कुसुमावतंसिनिकर्णे भुजगनिर्मोक कंचुकिनि ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रं कह कह ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वसिद्धिं दद दद देहि देहि दापय दापय सर्वशत्रून् दह दह बन्ध बन्ध पठ पठ मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय हूं हूं हूं फट् नमः स्वाहा किरातेश्वरि, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं वज्रकुब्जिके हसखफ्रीं प्राणेशि त्रैलोक्यकर्षिणि ह्रीं क्लीं अंगद्राविणि स्मरांगने अनघे महाक्षोभकारिणि ऐं क्लीं ग्लौः ग्लं ग्लां ग्लिं ग्लीं ग्लुं ग्लूं ग्लृं ग्लॄं ग्लें ग्लैं ग्लों ग्लौं ग्लः ग्लौः ग्लौं वज्रकुब्जिके, नमो भगवति घोरे महेश्वरि हसखफ्रीं देवि श्रीकुब्जिके रह्रीं स्त्रीं स्त्रूं

ङ्गणनम अघोरामुखि छां छीं छूं किलि किलि विच्चे पादुकां पूजयामि नमः समयकुब्जिके।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें हसफ्रीं हसखफ्रें क्षह्रम्लव्र्यीं भगवति विच्चे घोरे हसखफ्रें ऐं श्रीं कुब्जिके, रह्रीं रह्रूं स्हौं ङ्गणनम अघोरामुखि छां छीं छूं किलि किलि विच्चे स्त्रीं हूं स्हौः पादुकां पूजयामि नमः स्वाहा, मोक्षकुब्जिके नमो भगवति सिद्धे महेशानि हसफ्रां हसफ्रीं हसफ्रूं कुब्जिके रह्रां रह्रीं रह्रूं खगे ऐं अघोरे अघोरामुखि किलि किलि विच्चे पादुकां पूजयामि नमः भोगकुब्जिके।

ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें श्र्यों श्र्यों? भगवत्यम्ब कुब्जिकायै हसकलक्रीं यां ग्लौं ठौं ऐं क्रूं ङ्गणनम अघोरामुखि छां छीं छूं किलि किलि विच्चे म्रों श्रों हसखफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं जयकुब्जिके ऐं ह्रीं श्रीं सहसखफ्रीं स्हौं भगवत्यम्ब कुब्जिके ङ्गणनम अघोरामुखि छां छीं किलि किलि विच्चे फट् स्वाहा हूं फट् स्वाहा नमः ऐं ऐं ऐं सिद्धिकुब्जिके, ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रीं स्हौः म्लक्षकसहह्रूं सम्लक्षकसहह्रूं सह्रफ्रीं? कुब्जिके ह्रीं ह्रीं आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय वेधय वेधय ह्रीं ह्रीं सम्लक्षकसहह्रूं म्लक्षकसहह्रूं नमः स्वाहा आवेशकुब्जिके हसखफ्रें ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं कालि कालि महाकालि मांसशोणितभोजिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं रक्तकृष्णमुखि देवि मा मां पश्यन्तु शत्रवः श्रीं हृदयशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि ह्रां हृदयाय नमः हृदय शिवदूती।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं नमो भगवति दुष्टचाण्डालिनि रुधिरमांसभक्षिणि कपालखट्वांगधारिणि हन हन दह दह पच पच मम शत्रून् ग्रस ग्रस मारय मारय हूं हूं हूं फट् स्वाहा शिवदूती श्रीपादुकां पूजयामि ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरः शिवदूति, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हसखफ्रां हसखफ्रीं हसखफ्रूं महापिंगलजटाभारे विकटरसनाकराले सर्वसिद्धिं देहि देहि दापय दापय शिखाशिवदूती श्रीं पादुकां पूजयामि हूं शिखायै वषट् शिखाशिवदूती, ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं महाश्मशानवासिनि घोराट्टहासिनि विकटतुंगकोकामुखि ह्रीं क्लीं श्रीं महापातालतुलितोदरि भूतवेतालसहचारिणि अनघे कवचशिवदूती श्रीपादुकां पूजयामि कवचाय हुं कवचशिवदूति।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं लेलिहानरसनाभयानके विस्रस्तचिकुरभारभासुरे चामुण्डाभैरवीडाकिनी गणपरिवृते फ्रें ख्फ्रें हूं आगच्छ आगच्छ सान्निध्यं कल्पय कल्पय त्रैलोक्यडामरे महापिशाचिनि नेत्रशिवदूति श्रीपादुकां पूजयामि नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशिवदूति। ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं गुह्यातिगुह्यकुब्जिके हूं हूं हूं फट् मम सर्वोपद्रवान् मंत्रतंत्रई यंत्रचूर्णप्रयोगादिकान् परकृतान् करिष्यन्ति तांन् सर्वान् हन हन मथ मथ मर्दय मर्दय दंष्ट्राकरालि फ्रें हूं फट् गुह्यातिगुह्यकुब्जिके अस्त्रशिवदूति श्रीपादुकां पूजयामि अस्त्राय फट् अस्त्र शिवदूति।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हूं हूं हूं हूं हूंकारघोरनाद विद्राविद्राविजगत्त्रये ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रसारितायुतभुजे महावेगप्रधाविते क्लीं क्लीं क्लीं

पदविन्यासत्रासित सकलपाताले श्रीं श्रीं श्रीं व्यापकशिवदूति जितेन्द्रिये परमशिवपर्यंकशायिनि छ्रीं छ्रीं छ्रीं गलद्रुधिरमुण्डमालाधारिणि घोरघोरतररूपिणि फ्रें फ्रें फ्रें ज्वालामालि पिंगजटाजूटे अचिन्त्यमहिमबलप्रभावे स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं दैत्यदानवनिकृन्तनि सकलसुरासुरकार्यसाधिके ओं ओं ओं फट् नमः स्वाहा व्यापकशिवदूति।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्रों ह्रीं आं हूं टं गं सं हौं ग्लूं क्रौं हसखफ्रें फ्रों क्रूं छ्रीं फ्रें क्लौं ब्लौं क्लूं स्हौः स्फ्रें ख्रैं जूं ब्रीं कालसंकर्षिणि हूं हूं स्वाहा कालसंकर्षिणि, ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसखफ्रें हूं हूं कुक्कुटि क्रीं आं क्रों फ्रें फ्रों फट् स्वाहा कुक्कुटि, ओं ह्रीं क्लीं स्त्रीं फ्रें भ्रमराम्बिके शत्रुमर्दिनि आं क्रों हौं हूं छ्रीं फट् फट् नमः स्वाहा ओं भ्रमराम्बिके, फ्रों धनदे ह्रीं सां सीं सूं संकटादेवि संकटेभ्यो मां तारय तारय श्रीं क्लीं हौं हूं आं फट् स्वाहा संकटादेवि।

ओं क्रों हौं भोगवति ओं ह्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं षं सं हं क्षं षः सः हः क्षः हूं नमोः भगवति महार्णवेश्वरि त्रैलोक्यग्रसनशीले आं ईं ऊं फट् स्वाहा महार्णवेश्वरि, आं क्षीं पीं चूं भगवति म्लक्षक सहह्रूं चण्ड झंकारकापालिनि जयंकेश्वरि ठः ठः जयकेंश्वरि, ओं ह्रीं आं शवरेश्वर्यै नमः शवरेश्वरि।

ओं ऐं आं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं फ्रें ख्फ्रें हसख्फ्रें पिंगले पिंगले महापिंगले क्रीं हूं फ्रें छ्रीं स्हौः क्रीं क्रों फ्रें स्त्रीं श्रीं फ्रों ब्लौं ब्रीं ठः

ठः सिद्धिलक्ष्मि ओं ऐं ह्रीं क्लीं भगवति महामोहिनि ब्रह्मविष्णुशिवादि सकलसुरासुरमोहिनि सकलं जनं मोहय मोहय वशीकुरू वशीकुरू कामांगद्राविणि कामांकशे स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं महामोहिनि, ऐं क्लीं यं क्ष्रस्त्रीं हं हां हिं हीं हुं हूं ह्रं ह्लृं हें हैं हों हौं हः ह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं त्रिपुरसुन्दरि हूं नमो मूकाम्बिकायै वादिनों मूकय मूकय आं क्लीं ह्रीं स्हें स्हः सौः स्वाहा मूकाम्बिके, ह्रीं क्रौं हूं फट् एकजटे ह्रीं क्रौं हूं नीलसरस्वती ओं ह्रीं क्रों वीं फट् उग्रतारे ओं श्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये वीं वीं फट् ठः ठः छिन्नमस्ते ओं नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्रीं ह्रीं सुमुखि वगले विश्वं मे वशं कुरु कुरु ठः ठः छिन्नमस्ते ओं नमो भगवत्यै पीतम्बरायै ह्रीं ह्रीं सुमुखि बगले विश्वं मे कुरु कुरु ठः ठः वश्यवगले हूं रक्ष त्रिकण्टकि ओं क्रों क्लीं श्रीं क्रः आं स्त्रीं हूं जयदुर्गे रक्ष रक्ष स्वाहा संग्रामजयदुर्गे ह्रीं क्लीं हूं विजयप्रदे ओं ऐं हौं ग्लूं क्रौं ब्रीं फट् ब्रह्माणि।

ओं हौं ग्लूं आं ह्रीं श्रीं वीं माहेश्वरि व्रीं ब्लौं क्लौं फ्रें क्लूं क्रीं फ्रों जूं ग्लूं स्हौः हूं हूं फट् फट् स्वाहा माहेश्वरि, ह्रीं ऐं क्लीं औं कौमारि मयूरवाहिनी शक्तिहस्ते हूं फ्रें स्त्रीं फट् फट् स्वाहा कौमारि। ओं नमो नारायण्यै जगत्स्थितिकारिण्यै क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं आं जूं ठः ठः वैष्णवि। ओं नमो भगवत्यै वराहरूपिण्यै चतुर्दशभुवनाधिपायै भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा वाराहि, ओं आं क्रों हूं जूं ह्रीं क्लीं स्त्रीं क्ष्रूं क्षौं फ्रों जूं फ्रें जिह्वासटा घोररूपे

दंष्ट्राकराले नारसिंहि हौं हौं हौं हूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा नारसिंहि, ओं क्लीं श्रीं हूं इन्द्राणि ह्रीं ह्रीं जय जय क्षौं क्षौं फट् फट् स्वाहा इन्द्राणि।

ओं क्रों क्रीं फ्रें फ्रों छ्रीं ख्रौं णीं हसखफ्रें ब्लौं जूं क्लूं ह्रीं व्रीं क्षूं क्रौं चामुण्डे ज्वल ज्वल हिलि हिलि किलि किलि मम शत्रून् त्रासय त्रासय मारय मारय हन हन पच पच भक्षय भक्षय क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् फट् ठः ठः चामुण्डे ओं नमः कामेश्वरि कामांकुशे कामप्रदायिके भगवति नीलपताके भगान्तिके महेश्वरि क्लूं नमोऽस्तुते परमगुह्ये वीं वीं वीं हूं हूं हूं मदने मदनान्तदेहे त्रैलोक्यमावेशय हूं फट् स्वाहा नीलपताके, क्रीं क्रीं हूं हूं हूं हूं क्रों क्रों क्रों श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं चण्डघण्टे शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय हूं फट् स्वाहा चण्डघण्टे।

ओं ह्रीं श्रीं हूं क्रों क्रीं स्त्रीं क्लीं स्हजहलक्षम्लवनऊं लक्षमह्रजरक्रव्य्रऊं हस्लक्षकमह्रव्रूं म्लकह्रक्षरस्त्रै चण्डेश्वरि ख्रौं छ्रीं फ्रें क्रौं हूं हूं फट् फट् स्वाहा चण्डेश्वरि, ओं ऐं आं ह्रीं हूं क्रों क्षौं क्रीं क्रौं फ्रें अनंगमाले स्त्रियमाकर्षयाकर्षय त्रुट त्रुट छेदय छेदय हूं हूं फट् फट् स्वाहा अनंगमाले।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्रीं आं क्रों फ्रों हूं क्षूं हसखफ्रें फ्रें हरसिद्धे सर्वसिद्धिं कुरु कुरु देहि देहि दापय दापय हूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा हरसिद्धे, ओं क्रों क्रौं हसखफ्रें हूं छ्रीं फेत्कारि दद दद देहि देहि

दापय दापय स्वाहा फेत्कारि ऐं श्रीं आं हौं हूं स्फ्रों स्हौः फ्रें छ्रीं स्त्रीं ट्रीं ध्रीं प्रीं थ्रीं क्रां ओं लवणेश्वरि क्रः छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नाकुलि ओं ऐं आं हूं ह्रीं श्रीं हूं क्लीं जूं मृत्युहारिणि ओं ऐं ह्रीं हूं नमो भगवति रुद्रवाराहि रुद्रतुण्डप्रहारे क्रं क्रं क्रां क्रां सर्वोत्पातान् प्रशमय प्रशमय क्लीं छ्रीं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा वज्रवाराहि।

ओं ह्रीं क्षौं क्रों हं हं हं हयग्रीवेश्वरि चर्तुवेदमयी फ्रें छ्रीं स्त्रीं हूं सर्वविद्यानां मय्यधिष्ठानं कुरु कुरु स्वाहा हयग्रीश्ववेरि, ओं ऐं आं ह्रीं स्हः परमहंसेश्वरि कैवल्यं साधय स्वाहा परमहंसेश्वरि, ओं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं निर्विकारस्थ चिदानन्दघनरूपायै मोक्षलक्ष्म्यै अमितानन्त शक्तितत्त्वायै क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ओं मोक्षलक्ष्मि ओं क्रीं नमो ब्रह्मवादिन्यै क्रीं ओं नमः स्वाहा, ह्रीं क्लीं हूं फ्रें शातकर्णि महाघोररूपिणि ओं श्रीं छ्रीं स्त्रीं फट् फट् स्वाहा शातकर्णि, ओं ओं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महेश्वरि सर्वमुखरूपे जातवेदासि ब्रह्मास्त्रेण नाशय सचराचरं जगत् स्वाहा जातवेदासि।

ओं आं ऐं क्रों क्रीं श्रीं क्लीं हूं फ्रें महानीले प्रलयाटोपघोरनादघुघुरि आत्मानमुपशमय जूं सः स्वाहा महानीले, ओं क्लीं क्रां क्लीं ब्रह्मविद्ये जगद्ग्रसनशीले महाविद्ये ह्रीं हूं ह्रीं विष्णुमाये क्षोभय क्षोभय क्लीं क्रों आं स्हीं शिवे सर्वास्त्राणि ग्रस ग्रस हूं फट्, ओं स्हीं वगलामुखि सर्वशत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मशिरसे ब्रह्मास्त्राय हूं क्लीं स्हीं ओं नमः स्वाहा विष्णुमाये, ओं ह्रीं फ्रें ख्फ्रें श्रीं क्लीं हूं छ्रीं

स्त्रीं गुह्येश्वरि महागुह्यविद्या सम्प्रदायबोधिके आं क्रों ग्लूं फट् कृष्णलोहिततनूदरि हौं हां हीं फट् नमः ठः ठः गुह्येश्वरि, ओं नमो श्वेतपुडरीकासनायै प्रतिसमयविजयप्रदायै भगवत्यै अपराजितायै क्रः श्रीं क्लीं फट् स्वाहा ओं अपराजिते, ओं ह्रीं हं हां महाविद्ये मोहय विश्वकर्मकम् ऐं श्रीं क्लीं त्रैलोक्यमावेशय हूं फट् फट् महाविद्ये।

ऐं स्हौः ख्फ्रें डलखल हक्षखमव्यूं एह्येहि भगवति वाभ्रवी महाप्रलयताण्डवकारिणि गगनग्रासिनि श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें शत्रून् हन हन सर्वेश्वर्यं दद दद महोत्पान् विध्वंसय विध्वंसय सर्वरोगान् नाशय नाशय ओं श्रीं क्लीं हौं आं महाकृत्याभिचारग्रहदोषान् निवारय निवारय मथ मथ क्रों जूं ग्लूं हसखफ्रीं ख्फ्रें स्वाहा वाभ्रवि।

ओं ह्रीं श्रीं हूं भगवति महाडामरि डमरुहस्ते नीलपीतमुखि जीवब्रह्मगलनिष्पेषिणि, छ्रीं स्त्रीं श्रीं हूं भगवति महाडामरि डमरुहस्ते नीलपीतमुखि जीवब्रह्मगलनिष्पेषिणि, छ्रीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें महाश्मशानरंगनचर्चरी गायिके तुरु तुरु मर्द मर्द मर्दय मर्दय हसख्फ्रें स्वाहा डामरि, ओं ह्रीं फ्रें वेतालमुखि चर्चिके हूं छ्रीं स्त्रीं ज्वालामालि विस्फुलिंगरमणि महाकपालिनि कात्यायनि श्रीं क्लीं ख्फ्रें कह कह धम धम ग्रस ग्रस आं क्रों हौं नरमांसरुधिर परिपूरितकपाले ग्लूं क्लौं ब्लूं णीं णीं णीं फट् फट् स्वाहा चर्चिके, ह्रीं ह्रीं महामंगले महामंगलदायिनि अभये भयहारिणि स्वाहा अभये।

ओं ऐं क्रैं हौं स्हौः उत्तानपादे एकवीरे हस हस गाय गाय नृत्त्य नृत्त्य रक्ष रक्ष क्षूं फ्रों जूं ब्रीं क्लूं पाशघण्टामुण्ड खटवांगधारिणि फट् फट् नमः ठः ठः एकवीरे, ओं ह्रीं हूं ऐं श्रीं क्लीं आं क्रों हौं भगवति महाघोरकरालिनि तामसि महाप्रलयताण्डविनि चर्चरीकरातालिके जयजय जननि जम्भ जम्भ महाकालि कालनाशिनि भ्रामरि भ्रामरि डमरुभ्रामणि ऐं क्लीं स्फ्रों छ्रीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें हसफ्रें हसख्फ्रें फट् नमः स्वाहा तामसि भ्रामरि भ्रामरि डमरुभ्रामिणि ऐं क्लीं स्फ्रों छ्रीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें हसखफ्रीं हसख्फ्रें फट् नमः स्वाहा तामसि।

ओं ऐं समरविजयदायिनि मत्तमातंगदायिनि श्रीं आं क्रः भगवति जयन्ति समरे जयं देहि देहि मम शत्रून् विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय भंज भंज मर्दय मर्दय तुरु तुरु श्रीं क्लीं स्त्रीं नमः स्वाहा जयन्ति, ओं श्रीं आं क्रों क्लीं हूं क्ष्रीं हैं एकानंशे डमरुडामरि नीलाम्बरे नीलविभूषिणे नीलनागासने सकलसुरासुरान् वशे कुरु कुरु जन्यिके कन्यिके सिद्धदे वृद्धिदे छ्रीं स्त्रीं हूं क्लीं फ्रें हौं फट् स्वाहा एकानंशे, ऐं ब्रह्मवादिन्यै ब्रह्मरूपिन्यै ठः ठः ब्रह्मरूपिणि ओं ह्रीं श्रीं क्लीं णीं भगवति नीललोहितेश्वरि त्रिभुवनं रंजय रंजय सकलसुरासुरान् आकर्षयाकर्षय नमः स्वाहा नीललोहितेश्वरि, ऐं श्रीं त्रिकालवेदिन्यै स्वाहा त्रिकालवेदिनि।

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीं फ्रें हूं फट् ब्रह्मवेतालराक्षसि क्रीं क्षूं फ्रों विष्णुशवावतंसिके छ्रीं स्हौः ग्लूं महारुद्रकुणपारूढे ऐं आं हौं फट् फट् नमः स्वाहा कोरंगि, ओं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं हौं हूं आं छ्रीं स्त्रीं हूं क्रीं क्लौं स्वाहा रक्तदन्ति, कः क्लीं णीं फ्रें ख्फ्रें हसखफ्रीं हसख्फ्रें क्षरह्रीं जरक्रीं रह्रीं रश्रीं फट् स्वाहा भूतभैरवि, ऐं श्रीं आं ईं नमः षडाम्नायपरिपालिन्यै शोषिष्यै द्राविण्यै नामक्यै भ्रामक्यै जूं ब्लुं सौः कुलकोटिन्यै काकासनायै फ्रें फट् ठः ठः कुलकुट्टिनि, ओं क्लीं ग्लूं ह्रीं स्त्रीं हूं फ्रें छ्रीं फ्रों कामाख्यायै फट् स्वाहा कामाख्ये, ऐं आं हौं स्हौः क्रों जूं चतुरशीतिकोटिमूर्त्तये विश्वरूपायै ब्रह्माण्डजठरायै ओं स्वाहा विश्वरूपे, आं ईं ऊं ऐं औं क्षेमंकर्य्यै ठः ठः क्षेमंकरि।

ऐं ओं ह्रीं क्लीं निगमागमबोधिते सद्यो धनप्रदे भगवति कुलेश्वरि हूं फट् ठः ठः कुलेश्वरि, ऐं क्लीं जगदुन्मादिन्यै कामांकुशायै विश्वविद्राविण्यै स्त्रींपुरुषमोहिन्यै ह्रीं हूं स्त्रीं स्वाहा कामांकुशे, ओं नमः सर्वधर्मध्वजायै सकलसमयाचार बोधितायै हूं आवेशिन्यै फट् स्वाहा आवेशिनि।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं ख्फ्रें हूं फट् करालिनि मायूरिशिखिपिच्छकाहस्ते सद्यो धनं ख्फ्रें क्लौं पां स्त्रीं ऋक्षकर्णिं जालन्धरि मा मां द्विषन्तु शत्रवः नन्दयन्तु भूपतयो भयं मोचय हूं फट् स्वाहा मायूरि, ओं ऐं ग्लूं क्रों इन्द्राक्षि हूं हूं हूं फट् फट् फट् स्वाहा इन्द्राक्षि, क्रीं क्रों क्रूं क्रां ह्रीं फ्रों घोणकि घोणकिमुखि तुभ्यं

नमः स्वाहा घोणकि, ऐं ह्रीं श्रीं हूं क्लीं फ्रें छ्रीं फ्रें हसखफ्रें भीमादेवी भीमनादे भीमकरालि क्ष्रूं हसख्फ्रीं फ्रों श्रीं सिद्धेश्वरि सहकह्रीं स्हकह्रलह्रीं सक्लह्रकह्रीं महाघोरघोरतरे भगवति भयहारिणि मां द्विषतो निर्मूलय निमूर्लय विद्रावय विद्रावय उत्सादय उत्सादय महाराज्यलक्ष्मीं वितरय वितरय देहि देहि दापय दापय ख्फ्रें हसख्फ्रीं ग्लूं स्हौः हौं हूं क्षौं ब्लीं हौं जयजय राक्षसक्षयकारिणि ओं हीं हूं ठः ठः ठः फट् फट् फट् नमः स्वाहा भीमादेवि।

ओं ऐं श्रीं ह्रीं हूं फ्रें ख्फ्रें हसखफ्रीं हसख्फ्रें फ्रें प्रविश संसारं महामाये फ्रें फट् ब्रह्मशिरोनिकृन्तनि विष्णुतनुनिर्दलिनि जें जम्भिके स्तें स्तम्भिके छिन्दि छिन्दि भिन्दि भिन्दि दह दह मथ मथ पच पच पंचशवारूढे पंचागमप्रिये ग्लूं ब्लीं खौं श्रीं क्लीं फ्रें पंचपाशुपतास्त्र धारिणि हूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा ब्रह्मनिकृन्तनि ओं नमः परशिव विपरीताचारकारिणि ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं महाघोर विकरालिनि खण्डार्धशिरोधारिणि भगवत्युग्रे फ्रें ख्फ्रें हसफ्रीं हसखफ्रें म्लक्षकसहह्रूं हूं फट् स्वाहा, ह्रीं हूं अर्धमस्तके क्रीं ओं हूं फ्रें स्त्रीं फ्रों चण्डखेचरी ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल निर्मांसदेहे ठः ठः चण्डखेचरि, ओं नमः प्रचण्डघोर दावानलवासिन्यै ह्रीं ह्रं समयविद्याकुलतत्त्वधारिण्यै महामांसरुधिरप्रियायै छ्रीं स्त्रीं क्लीं धूमावत्यै सर्वज्ञतासिद्धिदायै फ्रें फट् स्वाहा धूमावति।

ऐं ह्रीं आं ह्रां सौः क्लीं महाभोगिराज भूषणे सृष्टिस्थिति प्रलयकारिणि हूं हूंकारनाद भूरिकालनाशिनि तारिणि भगवति हाटकेश्वरि ग्लूं ब्लीं भ्रूं द्रैं श्रीं ऐं फ्रों फ्रें ख्फ्रें मम शत्रून् मारय मारय बन्धय बन्धय मर्दय मर्दय पातय पातय महेश्वरि धनधान्यायुरारोग्यैश्वर्यं देहि देहि दापय दापय ट्रीं ध्रीं थ्रीं प्रीं हौं आं क्रों ऐं ओं नमः स्वाहा हाटकेश्वरि।

ओं आं ऐं ह्रीं श्रीं शक्तिसौपर्णि कमलासने उच्चाटय उच्चाटय विद्वेषय विद्वेषय हूं फट् स्वाहा शक्तिसौपर्णि, ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें हसफ्रीं हसख्फ्रें श्लां रक्ष्रीं जरक्रीं रह्रीं भगवति महामारि जगदुन्मूलिनि कल्पान्तकारिणि शिरोनिविष्टवामचरणे दिगम्बरि समयकुल चक्रचूडालये मां रक्षरक्ष त्राहि त्राहि पालय पालय प्रज्वलदावानल ज्वालाजटालजटिले हं हं हं नमः स्वाहा महामारि।

ओं ऐं रक्ताम्बरे रक्तस्रगनुलेपने महामांसरक्तप्रिये महाकान्तारे मां त्राहि त्राहि स्त्रीं क्लीं ह्रीं हूं फ्रें फट् स्वाहा मंगलचण्डि, ह्रीं फट् नमश्चण्डोग्रकालिनि परमशिवशक्ति सामरस्य निर्वाणदायिनि नरकंकालधारिणि ब्रह्मविष्णुकुणप वाहिनि ऐं ओं फ्रें प्रत्यक्षं परोक्षं मां द्विषन्ति ये तानपि हन हन नाशय नाशय कूष्माण्ड डाकिनी स्कन्द वेतालभयं नुद नुद कोकामुखि स्वाहा।

ओं ह्रीं क्लीं फ्रें हूं ओं ह्रीं हूं श्मशानशिखाचारिण्यै भगवत्यै ज्वालाकाल्यै छ्रीं स्त्रीं फ्रें क्रीं फ्रों फट् नमः स्वाहा ज्वालाकालि, ऐं

श्रीं क्लीं आं क्रों क्रीं छ्रीं स्त्रीं घोरनादकालि सिद्धिं मे देहि सर्वविघ्नमुपशमय सिद्धिकरालि सिद्धिविकरालि हूं हूं फट् स्वाहा घोरनादकालि, ह्रीं हूं फ्रें ख्फ्रें छ्रीं उग्रकाल्यै खेचरीसिद्धिदायिन्यै परापरकुलचक्रनायिकायै ग्लूं क्रौं स्त्रीं क्षौं क्लीं त्रिशूलझंकारिण्यै नमः स्वाहा उग्रकालि, हौं स्हौः सौः क्रीं ह्रीं फ्रें फ्रों हूं फट् वेतालकालि।

श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं क्रीं भगवति संहारकालि ब्रह्माण्डं पिष पिष चूर्णय चूर्णय मां रक्ष रक्ष जूं क्लौं हूं हूं हूं फट् फट् नमः स्वाहा संहारकालि, ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महाघोर विकटरूपायै ज्वलदनलवदनायै सर्वज्ञतासिद्धिदायै क्रीं फ्रें हूं नमः फट् स्वाहा रौद्रकालि, फ्रें चण्डाट्टहासिनि ख्फ्रें ब्रह्माण्डमर्दिनि हसफ्रीं ब्रह्मविष्णुशिवभक्षिणि हसखफ्रें मृत्युमृत्युदायिनि भक्तसिद्धि विधायिनि म्लक्षकसहह्रूं भगवति कृतान्तकालि हूं फट् रक्षक्रीं ऊं नमः फट् स्वाहा कृतान्तकालि।

ओं ऐं श्रीं क्लीं फ्रें क्रीं छ्रीं स्त्रीं हूं भीमकालि क्रीं क्रीं क्षूं क्रौं व्रीं प्रेतशिवपर्यंकशायिनि महाभैरवविनादिनि पशुपाशं मोचय मोचय स्त्रीं फ्रें ख्रौं फ्रों चण्डकालि हूं फट् फट् चण्डकालि, सौः ब्लीं ठौं प्रीं ईं धनकालि धनप्रदे धनं मे देहि दापय क्रीं फ्रें हूं विषधरवज्रिणि क्लीं श्रीं नमः स्वाहा धनकालि।

ओं स्फ्रों ब्लौं क्लौं घोरकालि विश्वं वशीकुरु सर्वं साधय साधय करालि विकरालि छ्रीं स्त्रीं फ्रें प्रेतारुढे प्रेतावतंसे ह्रीं श्रीं क्लीं राजानं

मोहय मोहय हूं फट् नमः घोरकालि, ऐं ह्रीं श्रीं क्लूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें क्रीं फट् ठः ठः संत्रासकालि, क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं लेलिहानरसनाकराले रोरूयमान सजीवशिवा नक्षत्रमाले छ्रीं स्त्रीं फ्रें प्रेतकालि भगवति भयानके मम भयमपनय स्वाहा प्रेतकालि।

ओं ऐं ह्रीं हूं क्लूं भ्रूं ख्रौं क्रः फ्रें प्रलयकालि प्रलयकारिणि नवकोटिकुलाकुलचक्रेश्वरि श्रीं घ्रीं ब्लूं म्लैं हभ्रीं परमशिवतत्त्वसमय प्रकाशिनि क्रः फट् स्वाहा प्रलयकालि, आं क्रीं क्लीं श्रीं ऐं विभूतिकालि सम्पदं मे वितर वितर सौभ्या भव वृद्धिदा भव सिद्धिदा भव जय जय जीव जीव अं थ्रां इं ट्रीं उं ध्रीं एं प्रीं ठः ठः फट् फट् फट् नमः स्वाहा ओं ओं ओं विभूतिकालि।

ओं क्रों ह्रीं क्लीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं श्रीं ऐं जयकालि परमचण्डे महासूक्ष्म विद्यासमयप्रकाशिनि क्ष्रौं प्लुं वफलुँ नमः स्वाहा जयकालि, ऐं श्रीं ओं फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रें फ्रैं फ्रौं भोगकालि हसखफ्रें हसखफ्रैं फट् फट् स्वाहा भोगकालि, हूं नमः कल्पान्तकालि भगवती भीमरावे खफह्रूं भौं फ्रूं म्रूं बं मेघमाले महामारीश्वरि विद्युत्कटाक्षे अरूपे बहुरूपे विरूपे ज्वलितमुखि चण्डेश्वरि रह्रीं हभ्रीं स्वाहा कल्पान्तकालि, ओं छ्रीं ज्रीं ब्लीं डामरमुखि वज्रशरीरे हूं सन्तानकालि फट् ठः ठः मन्थानकालि।

ओं ह्रीं हूं रलहक्षसमहफ्रछ्रीं कहलश्रीं ह्लक्षकमह्रसव्य्रऊं क्षम्लकस्हरयब्रुं क्षहलीं दुर्जयकालि हट्टायुधधारिणि वज्रशरीरे रश्रीं रह्रीं

क्षहल्रीं कालविध्वंसिनि कुलचक्रराजेश्वरि स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्तृं स्त्रें स्त्रैं स्त्रों स्त्रौं स्त्रः फट् फट् फट् स्वाहा, दुर्जयकालि, ऐं आं ईं ऊं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं घोराचाररौद्रे महाघोरवाडवाग्निं ग्रस ग्रस महाबले महाचण्डयोगेश्वरि नमः ठः ठः कालकालि, ऐं क्रैं व्रूं वज्रकालि महाबले क्ष्रौः क्ष्रौं सद्यो महाप्रपंचरूपे रौषिकानलं पत पत फेरुमुखि योगिनी डाकिनी खेचरी भूचरी सु रूपिणि चक्रसुन्दरि महाकालि कापालि रीं णीं थ्रीं रक्ष्रां कह कह त्वां प्रपद्ये तुभ्यं नमः स्वाहा वज्रकालि।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धियोनि महाराविणि परम गुह्यातिगुह्यमंगले विद्याकालि ब्लां हफ्रीं फ्रीं भ्रीं स्क्रीं रछ्रूं ज्रूं प्रीं छ्रीं धीवरीस्वरूपिणि शवरी पीवरी चर्चिके भक्षिके रक्षिके हें ञां ठः ठः ठः फट् फट् फट् विद्याकालि, ओं आं ईं ऐं प्रीं थ्रीं ग्रीं स्त्रूं म्रैं म्लौं ख्रूं छ्रूं ट्रूं म्रीं यं यां यिं यीं युं यूं यृं ल्रृं यें यैं यों यौं यः भौं स्वाहा शक्तिकालि।

ओं हसखफ्रें नमश्चण्डातिचण्डे मायाकालि कालवंचनि महांकुशे पातालनागवाहिनि गगनग्रासिनि ब्रह्माण्ड निष्पेषिणि हं हं हं नमो नमो नमः हूं हूं हूं ओं ह्रीं हूं क्रैं खफ्रें महाचण्डवज्रिणि भ्रमरि भ्रामरि महाशक्तिचक्रकर्तरी कुलार्णव चारिणि फीं फां फें फूं फौं समय विद्यागोपिनि म्लब्र्म्रीं स्हक्ष्लमह्वजूं महाकालि समयलाभं कुरु कुरु विद्यां प्रकाशय प्रकाशय क्रां ह्रीं क्रौं क्रैं ह्रौं क्रं क्रः फट् स्वाहा महाकालि, ऐं परापररहस्य साधिके कुलकालि फ्रें छ्रीं स्त्रीं ह्रीं हूं

क्लीं ग्लूं हफ्रीं मक्षौः फट् फट् फट् कुलकालि, ओं ह्रीं क्लीं हूं फ्रें परापर परमरहस्य कालिकुल क्रम परम्परा प्रचारिणि भगवति नादकालि करालरूपिणि डलखलहक्षमखव्यूं फ्रें ख्फ्रें हसफ्रीं हसख्फ्रें मम शत्रून् मर्दय मर्दय चूर्णय चूर्णय पातय पातय नाशय नाशय भक्षय भक्षय सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं ज्लकहलक्षव्रमथ्रीं सहलक्षव्रठक्ष्रीं नवकोटि कुलाकुल चक्रेश्वरि सकल गुह्यानन्त तत्त्वधारिणि कूं चूं टूं तूं पूं मां कृपय कृपय ह्रीं ह्रूं फ्रें छ्रीं स्त्रीं फट् स्वाहा नादकालि ओं फ्रें चतुर शीतिकोटि ब्रह्माण्ड सृष्टि कारिणि प्रज्वलज्वलन लोचने वज्रसमदंष्ट्रायुधे दुर्निरीक्ष्याकारे भगवति मुण्डकालि कह कह तुरु तुरु दम दम चट चट प्रचट प्रचट सर्वसिद्धिं देहि देहि सर्वैश्वर्यं दापय दापय विद्युदुज्ज्वलजटे विकटसटे महाविकटकटे ह्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें नमः ठः ठः मुण्डकालि।

ओं ऐं आं श्रीं क्लीं ह्रीं क्षूं ब्लीं स्हफ्यूं औं क्वीं धूमकालि सर्वमेव मे वशं कुरु कुरु पाहि पाहि जम्भिके करालिके पूतिके घोणिके खं खं खं फट् नमः धूमकालि, ऐं क्रों फ्रें छ्रीं क्लीं आज्ञाकालि ममाज्ञां राजानः शिरसा धारयन्तु हूं फट् स्वाहा आज्ञाकालि, ओं ह्रीं क्रौं ड्रीं ड्रैं तिग्मकालि तिग्मरूपे तिग्मातितिग्मे भ्रमं मोचय स्वं प्रकाशय स्वाहा तिग्मकालि।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं स्त्रीं फ्रें श्रीं क्लीं हूं महाकालि लेलिहानरसना भयानके घोरतरदशन चर्वितब्रह्माण्डे चण्डयोगीश्वरी शक्तितत्त्वसहिते गां

जां डां दां रां प्रचण्डचण्डिनि महामारीसहायिनि भगवती भयानके चामुण्डा योगिनि डाकिनी शाकिनी भैरवी मातृगणमध्यगे जय जय कह कह हस हस प्रहस प्रहस जम्भ जम्भ तुरु तुरु धाव धाव श्मशानवासिनि शववाहिनि नरमांसभोजिनि कंकालमालिनि फ्रें फ्रें फ्रें तुभ्यं नमो नमः स्वाहा मध्यरात्रिकालि।

हसखफ्रें भगवति संग्रामकालि संग्रामे जयं देहि देहि मां द्विषतो मम वशे कुरु कुरु पां पीं पूं पैं पौं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल विद्युत्केशि पातालनयनि ब्रह्माण्डोदरि महोत्पातं प्रशमय प्रशमय ह्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें नमः ठः ठः संग्रामकालि, ऐं फ्रें छ्रीं हूं क्षौं नक्षत्र नरमुण्डमालालंकृतायै चतुर्दशभुवन सेवित पादपद्मायै भगवत्यै शवकालिकायै यूं रूं लूं वूं शूं षूं सूं हूं क्षूं दुष्टग्रहनाशिन्यै शुभफलदायिन्यै रुद्रासनायै रह्रीं रयक्ष्रीं हं हं हं खं खं खं हूं हूं हूं डं डं डं फट् फट् फट् नमः ठः ठः शवकालि।

ऐं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रैं क्ष्रौं क्ष्रः वमदग्निमुखि फेरुकोटिपरिवृते विस्रस्तजटाभारे भगवति नग्नकालि रक्ष रक्ष पाहि पाहि परमशिवपर्यंक निवासिनि ग्रीं घ्रीं ज्रीं झ्रीं ड्रीं ढ्रीं द्रीं ध्रीं ब्रीं भ्रीं विकरालमूर्तिकतामुपहृत्य दर्शय हूं नमः स्वाहा नग्नकालि, आं क्रों ऐं स्होः भ्रूं डूं ल्यूं ब्लै रुधिरकालिकायै निपीतबालनर रुधिरायै त्वगस्थिचर्मावशिष्टायै महाश्मशान धावन प्रचलितपिंग जटाभारायै ख्रौं थ्रौं च्रौं फ्रौं ख्रौं ममाभीष्टसिद्धिं देहि

देहि वितर वितर हूं डाकिनी राकिनी शाकिनी काकिनि लाकिनि हाकिनि सद्योधनानि नररुधिरं पिब पिब महामांसं खाद खाद ऐं ओं श्रीं ह्रीं क्लीं हूं फ्रें छ्रीं स्त्रीं फट् ठः ठः रुधिरकालि, क्रीं करंकधारिणि कंकालकालि प्रसीद प्रसीद विद्यामावाहयामि तवाज्ञया समागत्य मयि चिरं तिष्ठतु ठः ठः कंकालकालि।

ओं ऐं श्रीं आं ऊं ह्रीं क्लीं हूं फ्रें क्लीं भगवति भयंकरकालि त्रैलोक्य दुर्निरीक्ष्यरूपे नवकोटि भैरवीचामुण्डा शतकोटिपरिवृते मम द्विषतो हन हन मथ मथ पच पच विद्रावय विद्रावय पातय पातय निःशेषय निःशेषय रह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं नमः फट् भयंकरकालि, ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ध्रीं स्त्रीं फ्रें टूं टें रं रां रिं रीं रुं रूं रलृं रें रैं रों रौं रं रः फं शं क्षरह्रीं म्ररक्ष्रीं रक्ष्रीं स्वाहा फेरुकालि, ऐं हुं प्रण्डाक्षिवितते विकटकालि फां फीं फूं रह्रैं रह्रैं स्कीः स्कीः त्रुट त्रुट नमः ठः ठः विकटकालि क्रं हूं आये माये ताये प्रचण्डचण्डे रक्षिणि भक्षिणि दक्षिणि ठः ठः करालकालि।

ओं फ्रें सर्वाभयप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे चटिनि वटिनि कटिनि स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रौं ग्रः नमः स्वाहा, फ्रें ख्फ्रें ओं ऐं आं क्रों क्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें ध्रीं क्रूं श्रूं क्रौं घोरघोरतरकालि ब्रह्माण्डवर्हिणि निर्गतमस्तके जटाविधूननचकिततपोलाके ज्वालामालिनि सम्मोहिनि संहारिणि सन्तारिणि क्लां क्लीं क्लूं बलिं गृह्ण गृह्ण खादय खादय भक्ष भक्ष सिद्धिं देहि देहि मम शत्रून् नाशय नाशय

मथ मथ विद्रावय विद्रावय मारय मारय स्तम्भय स्तम्भय जम्भय जम्भय स्फोटय स्फोटय विध्वंसय विध्वंसय उच्चाटयोच्चाटय हर हर तुरु तुरु दम दम मर्द मर्द भस्मीकुरु भस्मीकुरु सर्वभूतभयंकरि सर्वशत्रुक्षयंकरि फ्रें ख्फ्रें हसफ्रीं हसख्फ्रें सर्वजनसर्वेन्द्रियहारिणि त्रिभुवनमारिणि संसारतारिणि स्फ्रें स्फ्रौं ज्रौं क्ष्रौं म्लैं क्लीं ब्लीं श्रीं प्रसीद भगवति नमः स्वाहा।

ह्रीं ह्रूं क्लीं छ्रीं घोरघोरतरकालि ह्रीं फ्रें क्रों ग्लूं छ्रीं स्त्रीं हूं स्फ्रों ख्फ्रें हसफ्रीं हसखफ्रें क्रैं स्होः फट् स्वाहा कामकलाकालि, ख्फ्रें रह्रीं रज्रीं रक्रीं रक्ष्रीं रछ्रीं यहसखफ्रीं फट् कामकलाकालि हूं फट् फ्रें कामकलाकालिकायै नमः स्वाहा कामकलाकालि क्रों स्फ्रों फ्रें ख्फ्रें हूं कामकलाकालि, क्लीं क्रीं हूं क्रों स्फ्रों कामकलाकालि स्फ्रों क्रों हूं क्रीं क्लीं स्वाहा कामकलाकालि सर्वशक्तिमयशरीरे सर्वमंत्रमयविग्रहे महासौम्य महाघोररूप धारिणि भगवति कामकलाकालि क्रः श्रीं क्लीं ऐं आं क्रों हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें क्रैं स्क्रौं रक्ष्रीं वं रह्रीं क्षह्रम्लव्र्यऊँ म्लक्षकसहह्रूं ह्रस्लहसकह्रीं स्हजहलक्षम्लवनऊँ सग्लक्षमहरह्रूं हूं हूं हूं फट् फट् नमः स्वाहा।

फलश्रुति– देव्याः कामकलाकाल्याः सर्वसिद्धिप्रदायिका। अस्याः स्मरणमात्रेण नासाध्यं भुवि विद्यते।। रावणं हतवान् देवि संजप्य राघवःपुरा। हिरण्यकशिपुं दैत्यं जघान परमेश्वरः।। एवं संजप्य देवेशि त्रिपुरं हतवान् हरः। कार्त्तवीर्य्यार्जुनो नाम राजा

बाहुसहस्रभृत्।। त्रैलोक्यविजयी वीरो मनोरस्यप्रसादातः। मनोरस्य प्रसादेन कुबेरोऽभूद्धनाधिपः।। मनोरस्य प्रसादेन अमरेशः शचीपतिः। मनोरस्य प्रभावश्च बहु किं कथ्यते त्वयि।। कीर्त्त्यर्थी कीर्त्तिं लभते धनार्थी लभते धनम्। राज्यार्थी राज्यं लभते यशोऽर्थी लभते यशः।। विद्यार्थी लभते विद्यां मुक्त्यर्थी मुक्तिमाप्नुयात्। पुत्रार्थी लभते पुत्रं दारार्थी दारमाप्नुयात्।। षष्ठकालीं च सम्पूज्य संजप्य मनुमुत्तमम्। यद्यद्वांछति यल्लोकस्तत्तदाप्नोति सत्वरम्।। यथा चिन्तामणिर्देवि यथा कल्पद्रुमस्तरुः। यथा रत्नाकारः सिन्धुः सुरभिश्च यथा धेनुः।। तथाशुफलदो देवि मंत्रोऽयुताक्षरः सदा। देव्याः कामकलाकाल्याः सर्वं निगदितं तव।। नित्यार्चनं जपं चैव स्तोत्रं कवचमेव च। सहस्रनामस्तोत्रं च तस्य गद्यमनुमत्तमम्।। पूजाकाले न्यासादिकं सर्वं निगदितं त्वयि। तव स्नेहेन देवेशि सर्वमेतत्प्रकाशितम्।। अतिगुह्यतमं देवि न प्रकाश्यं कदाचन्। मा प्रकाशय देवेशि शपथे तिष्ठ सर्वदा।। अधुना किं श्रवणेच्छा ते तन्मे कथय पार्वति।

रावणकृतं भुजंगप्रयातस्तोत्रम्- महाकाल उवाच- अथ वक्ष्ये महेशानि देव्याः स्तोत्रमनुत्तमम्। यस्य स्मरणमात्रेण विघ्ना यान्ति पराङ्मुखाः।।

विजेतुं प्रतस्थे यदा कालकस्यासुरान् रावणो मुंजमालिप्रवर्हान्। तदा कामकालीं स तुष्टाव वाग्भिर्जिगीषुर्मुधे बाहुवीर्य्येण सर्वान्।।

महावर्त्तभीमासृगब्धयुत्थवीची परिक्षालिता श्रान्तकन्थश्मशाने। चितिप्रज्वलद्बह्नि कीलाजटाले शिवाकारशावासने सन्निषण्णाम्।।

महाभैरवीयोगिनीडाकिनीभिः करालाभिरापादलम्बत्कचाभिः। भ्रमन्ती भिरापीय मद्यामिषास्रान्यजस्रं समं संचरन्तीं हसन्तीम्।।

महाकल्प कालान्तकादम्बिनीत्विट् परिस्पर्द्धिदेहद्युतिं घोरनादाम्। स्फुरद् द्वादशादित्यकालग्निरुद्र ज्वलद्विद्युदोघ प्रभादुर्निरीक्ष्याम्।।

लसन्नीलपाषाणनिर्माणवेदि प्रभश्रोणिबिम्बां चलत्पीवरोरुम्। समुत्तुंग पीनायतोरोजकुम्भां कटिग्रन्थितद्वीपिकृत्त्युत्तरीयाम्।।

स्रवद्रक्तवल्गन्नृमुण्डावनद्धा सृगाबद्धनक्षत्रमालैकहाराम्। मृतब्रह्म कुल्योपक्लृप्तांगभूषां महाट्टाट्टहासैर्जगत्त्रासयन्तीम्।।

निपीताननान्तामितोद्धत्तरक्तोच्छलद्धारया स्नापितोरोजयुग्माम्। महादीर्घ दंष्ट्रायुगन्यंचदंच ल्ललल्लेलिहानोग्रजिह्वाग्रभागाम्।।

चलत्पादपद्मद्वयालम्बिमुक्त प्रकम्पालिसुस्निग्ध सम्भुग्नकेशाम्। पदन्यास सम्भारभीताहिराजा ननोद्गच्छदात्मस्तुतिव्यस्तकर्णाम्।।

महाभीषणां घोरविंशार्द्धवक्त्रै स्तथासप्तविंशान्वितैर्लोचनश्च। पुरोदक्षवामे द्विनेत्रोज्जवलाभ्यां तथान्यानने त्रित्रिनेत्राभिरामाम्।।

लसद्द्वीपिहर्य्यक्षफेरुप्लवंग क्रमेलर्क्षतार्क्षद्विपग्राहवाहैः। मुखैरीदृशा काारितैर्भ्राजमानां महापिंगलोद्यज्जटाजूटभाराम्।।

भुजैः सप्तविंशांकितैर्वामभागे युतां दक्षिणे चापि तावद्भिरेव। क्रमाद्रत्नमालां कपालं च शुष्कं ततश्चर्मपाशं सुदीर्घं दधानाम्।।

ततः शक्तिखट्वांगमुण्डं भुशुण्डीं धनुश्चक्रघण्टाशिशुप्रेतशैलान्। ततो नारकंकालबभ्रूरगोन्माद्वंशीं तथा मुद्गरं वह्निकुण्डम्।।

अधो डम्मरुं पारिघं भिन्दिपालं तथा मौशलं पट्टिशं प्राशमेवम्। शतघ्नीं शिवापोतकं चाथ दक्षे महारत्नमालां तथा कर्त्तृखड्गौ।।

चलत्तर्ज्जनीमंकुशं दण्डमुग्रं लसद्रत्नकुम्भं त्रिशूलं तथैव। शरान् पाशुपत्यांस्तथा पंच कुन्तं पुनः पारिजातं छुरीं तोमरं च।।

प्रसूनस्रजं डिण्डिमं गृध्रराजं ततः कोरकं मांसखण्डं श्रुवं च। फलं बीजपूराह्वयं चैव सूचीं तथा पर्शुमेवं गदां यष्टिमुग्राम।।

ततो वज्रमुष्टिं कुणाप्पं सुघोरं तथा लालनं धारयन्तीं भुजैस्तैः। जवापुष्प रोचिष्फणीन्द्रोपक्लृप्त क्वणन्नपुरद्वन्द्वसक्तांघ्रिपद्माम्।।

महापीतकुम्भीनसावद्धनद्ध स्फुरत्सर्वहस्तोज्जवलत्कंकणां च। महापाटल द्योतिदर्वीकरेन्द्रा वसक्तांगदव्यूहसंशोभमानाम्।।

महाधूसरत्त्विड्भुजंगेन्द्रक्लृप्त स्फुरच्चारुकाटेयसूत्राभिरामाम्। चलत्पाण्डु राहीन्द्रयज्ञोपवीतत्विडुद्भासिवक्षः स्थलोद्यत्कपाटाम्।।

पिषंगोरगेन्द्रावनद्धावशोभा महामोहबीजांगसंशोभिदेहाम्। महाचित्रिता शीविषेन्द्रापक्लृप्त स्फुरच्चारुताटंकविद्योतिकर्णाम्।।

वलक्षाहिराजावनद्धोर्ध्वभासि स्फुरत्पिंगलोद्यज्जटाजूटभाराम्। महाशोण भोगीन्द्रनिस्यूतमुण्डो ल्लसत्किंकिणीजालसंशोभिमध्याम्।।

सदा संस्मरामीदृशीं कामकलीं जयेयं सुराणां हिरण्योद्भवानाम्। स्मरेयुर्हि येऽन्येऽपि ते वै जयेयुर्विपक्षान्मृधे नात्र सन्देहलेशः।।

पठिष्यन्ति ये मत्कृतं स्तोत्रराजं मुदा पूजयित्वा सदा कामकालीम्। न शोको न पापं न वा दुःखदैन्यं न मृत्युर्न रोगो न भीतिर्न चापत्।।

धनं दीर्घमायुः सुखं बुद्धिरोजो यशःशर्मभोगाः स्त्रियः सूनवश्च। श्रियो मंगलं बुद्धिरुत्साह आज्ञा लयः शर्म (सर्व) विद्या भवेन्मुक्तिरन्ते।।

त्रैलोक्य मोहन विजय श्रीकामकलाकाली कवचम्- महाकाल ने कहा- हे देवि! इस पृथ्वी पर ऐसी कोई सिद्धि नहीं है जो त्रैलोक्यमोहन कवच के जानने पर करस्थ न हो। जो लोग उपदेश के बिना इस दिव्य कवच का पाठ करते हैं वे शीघ्र ही योगनियों के द्वारा भक्षित होकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

उपदेक्ष्यामि तस्मात्त्वां बध्यतामंजलिः प्रिये। सावधाना स्थिरा भूत्वा गदतोऽनुगदस्व मे।।

त्रैलोक्यमोहनस्यास्य कवचस्य महेश्वरि। त्रिपुरारिः ऋषिः प्रोक्तो विराट् छन्द उदीरितम्।।

देवी भगवती कामकलाकाली प्रकीर्तिता। फ्रें बीजं बीजमुद्दिष्टं कामार्णं कीलकं मतम्।।

योगिनी शक्तिरुद्दिष्टा डाकिनी तत्त्वमुच्यते। विनियोगोऽस्य कथितः पुरुषार्थचतुष्टये।।

देवीकामकलाकालीप्रीत्यर्थे च विशेषतः। शत्रुक्षयार्थे राज्याप्त्यै प्रयोगोऽस्य वरानने।।

ॐ ऐं श्रीं क्लीं शिरः पातु फ्रें ह्रीं छ्रीं मदनातुरा। स्त्रीं ह्रूं क्षौं ह्रीं लं ललाटं पातु ख्फ्रें क्रौं करालिनी।।

आं हौं फ्रों क्षूँ मुखं पातु क्लूं ड्रं थ्रौं चण्डनायिका। हूं त्रैं च्लूं मौः पातु दृशौ प्रीं ध्रीं क्ष्रीं जगदम्बिका।।

कूं ख्रूं घ्रीं च्लीं पातु कर्णौं ज्रं प्लैं रुः सौं सुरेश्वरी। गं प्रां ध्रीं थ्रीं हनू पातु अं आं इं ईं श्मशानिनी।।

जूं डुं ऐं औं भ्रुवौ पातु कं खं गं घं प्रमाथिनी। चं छं जं झं पातु नासां टं ठं डं ढं भगाकुला।।

तं थं दं धं पात्वधरमोष्ठं पं फं रतिप्रिया। बं भं यं रं पातु दन्तान् लं वं शं सं च कालिका।।

हं क्षं क्षं हं पातु जिह्वां सं शं वं लं रताकुला। वं यं भं वं चं चिबुकं पातु फं पं महेश्वरी।।

धं दं थं तं पातु कण्ठं ढं डं ठं टं भगप्रिया। झं जं छं चं पातु कुक्षौ घं गं खं कं महाजटा।।

ह्सौः ह्स्ख्फ्रें पातु भुजौ क्ष्मूं म्रैं मदनमालिनी। ङां ञीं णूं रक्षताज्जत्रू नैं मौं रक्तासवोन्मदा।।

ह्रां ह्रीं ह्रूं पातु कक्षौ मे ह्रैं ह्रौं निधुवनप्रिया। क्लां क्लीं क्लूं पातु हृदयं क्लैं क्लौं मुण्डावतंसिका।।

श्रां श्रीं श्रूं रक्षतु करौ श्रैं श्रौं फेत्कारराविणी। क्लां क्लीं क्लूं अंगुलीः पातु क्लैं क्लौं च नारवाहिनी।।

च्रां च्रीं च्रूं पातु जठरं च्रैं च्रौं संहाररूपिणी। छ्रां छ्रीं छ्रूं रक्षतान्नाभिं छ्रैं छ्रौं सिद्धिकरालिनी।।

स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं रक्षतात् पार्श्वौ स्त्रैं स्त्रौं निर्वाणदायिनी। फ्रां फ्रीं फ्रूं रक्षतात् पृष्ठं फ्रैं फ्रौं ज्ञानप्रकाशिनी।।

क्षां क्षीं क्षूं रक्षतु कटिं क्षैं क्षौं नृमुण्डमालिनी। ग्लां ग्लीं ग्लूं रक्षतादूरू ग्लैं ग्लौं विजयदायिनी।।

ब्लां ब्लीं ब्लूं जानुनी पातु ब्लैं ब्लौं महिषमर्दिनी। प्रां प्रीं प्रूं रक्षताज्जंघे प्रैं प्रौं मृत्युविनाशिनी।।

थ्रां थ्रीं थ्रूं चरणौ पातु थ्रैं थ्रौं संसारतारिणी। ॐ फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीं छ्रीं ह्वं स्त्रीं फ्रें नमः।।

सर्वसिन्धषु सर्वांगं गुह्यकाली सदाऽवतु। ॐ फ्रें सिद्धिं ह्स्खफ्रें ह्सफ्रें ख्फ्रें करालि ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें हस्फ्रें फ्रें ॐ स्वाहा।।

रक्षताद् घोरचामुण्डा तु कलेवरं वहक्षमलवरयूं। अव्यात् सदा भद्रकाली प्राणानेकादशेन्द्रियान्।।

ह्रीं श्रीं ॐ ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें हक्षम्लब्रयूं न्क्ष्रीं नज्ज्रीं स्त्रीं छ्रीं ख्फ्रें ट्रीं घ्रीं नमः। यत्रानुक्तस्थलं देहे यावत्तत्र च तिष्ठिति।।

उक्तं वाऽप्यथवानुक्तं करालदशनावतु। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं स्त्रीं ध्रीं फ्रें क्षूं क्शौं क्रौं ग्लूं ख्फ्रें प्रीं ट्रीं थ्रीं ट्रैं ब्लौं फट् नमः स्वाहा।। सर्वमापादकेशाग्रं काली कामकलाऽवतु।

फलश्रुति– एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि। एतेन कवचेनैव यदा भवति गुण्ठितः।।

वज्रात् सारतरं तस्य शरीरं जायते तदा। शोकदुःखामयैर्मुक्तः सद्यो ह्यमरतां व्रजेत्।।

आमुच्यानेन देहं स्वं यत्र कुत्रापि गच्छतु। युद्धे दावाग्निमध्ये च सरित्पर्वतसिन्धुषु।।

राजद्वारे च कान्तारे चौरव्याघ्राकुले पथि। विवादे मरणे त्रासे महामारीगदादिषु।।

दुःस्वप्ने बन्धने घोरे भूतावेशग्रहोद्गतौ। विचर त्वं हि रात्रौ च निर्भयेनान्तरात्मना।।

एकावृत्त्याघनाशः स्यात् त्रिवृत्त्या चायुराप्नुयात्। शतावृत्त्या सर्वसिद्धिः सहस्रैः खेचरो भवेत्।।

वल्लेभऽयुतपाठेन शिव एव न संशयः। किं वा देवि जानेः सत्यं सत्यं ब्रवीमि ते।।

चतुस्त्रैलोक्यलाभेन त्रैलोक्यविजयी भवेत्। त्रैलोक्याकर्षणो मन्त्रस्त्रैलोक्यविजयस्तदा।।

त्रैलोक्यमोहनं चैतत् त्रैलोक्यवशकृन्मनुः। एतच्चतुष्टयं देवि संसारेष्वतिदुर्ल्लभम्।।

प्रसादात्कवचस्यास्य के सिद्धिं नैव लेभिरे। संवर्ताद्याश्च ऋषयो मारुत्ताद्या महीभुजः।।

विशेषतस्तु भरतो लब्धवान् यच्छृणुष्व तत्। जाह्नवी यमुनारेवाकावेरीगोमतीष्वयम्।।

सहस्रमश्व मेधानामेकैकत्राजहार हि। याजयित्रे मातृपित्रे त्वेकैकस्मिन् महाक्रतौ।।

सहस्रं यत्र पद्मानां कण्वायादात् सवर्म्मणाम्। सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं जिगाय त्रिदिनेन यः।।

नवायुतं च वर्षाणां योऽजीवत् पृथिवीपतिः। अव्याहतरथाध्वा यः स्वर्गपातालमीयिवान्।।

एवमन्योऽपि फलवानेतस्यैव प्रसादातः। भक्तिश्रद्धापरायास्ते मयोक्तं परमेश्वरि।।

प्राणात्ययेऽपि नो वाच्यं त्वयान्यस्मै कदाचन। देव्यदात् त्रिपुरघ्नाय स मां प्रादादहं तथा।।

तुभ्यं संवर्त्तऋषये प्रादां सत्यं ब्रवीमि ते। संवर्त्तो दास्यति प्रीतो देवि दुर्वाससे त्विमम्।।

दत्तात्रेयाय स पुनरेवं लोके प्रतिष्ठितम्। वक्त्राणां कोटिभिर्देवि वर्षाणामपि कोटिभिः।।

महिमा वर्णितुं शक्यः कवचस्यास्य नो मया। पुनर्ब्रवीमि ते सत्यं मनो दत्वा निशामय।।

इदं न सिद्धयते देवि त्रैलोक्यकर्षणं विना। ग्रहीत्रे तुष्यते देवी दात्रे कुप्यति तत्क्षणात्।। एतज् ज्ञात्वा यथाकर्तुमुचितं तत् करिष्यसि।

भगवती कामकालाकली की उपासना में प्रतिदिन कवच का पाठ अवश्य करना चाहिये। जिसके प्रभाव से साधक का समस्त प्रकार से कल्याण होता है एवं सर्वबाधाओं से मुक्ति मिलती है। सम्पूर्ण लाभ हेतु विधिवत् कवच का सिद्धिकरण कर लेना चाहिये।

श्रीकामकलाकाली अष्टोत्तरशतनामावली- ॐ स्फ्रें काल्यै नमः। ॐ स्फ्रें कपालिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कान्तायै नमः। ॐ स्फ्रें कामदायै नमः। ॐ स्फ्रें कामसुन्दर्यै नमः। ॐ स्फ्रें कालरात्र्यै नमः। ॐ स्फ्रें कालिकायै नमः। ॐ स्फ्रें कालभैरवपूजितायै नमः। ॐ स्फ्रें कुरुकुल्लायै नमः। ॐ स्फ्रें कामिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कमनीय स्वभाविन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुलीनायै नमः। ॐ स्फ्रें कुलकत्र्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुलवर्त्मप्रकाशिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कस्तूरी रसनीलायै नमः। ॐ स्फ्रें काम्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कामस्वरूपिण्यै नमः। ॐ स्फ्रें ककारवर्णनिलयायै नमः। ॐ स्फ्रें कामधेन्वै नमः। ॐ स्फ्रें करालिकायै नमः। ॐ स्फ्रें कुलकान्तायै नमः। ॐ स्फ्रें करालास्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कामार्तायै नमः। ॐ स्फ्रें कलावत्यै नमः। ॐ स्फ्रें कृशोदर्यै नमः। ॐ स्फ्रें कामाख्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कौमार्यै नमः।

ॐ स्फ्रें कुलपालिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुलजायै नमः। ॐ स्फ्रें कुलकन्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कलहायै नमः। ॐ स्फ्रें कुलपूजितायै नमः। ॐ स्फ्रें कामेश्वर्यै नमः। ॐ स्फ्रें कामकान्तायै नमः। ॐ स्फ्रें कुंजेश्वरगामिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कामदात्र्यै नमः। ॐ स्फ्रें कामहत्र्यै नमः। ॐ स्फ्रें कृष्णायै नमः। ॐ स्फ्रें कपर्दिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुमुदायै नमः। ॐ स्फ्रें कृष्णदेहायै नमः। ॐ स्फ्रें कालिन्द्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुलपूजितायै नमः। ॐ स्फ्रें काश्यप्यै नमः। ॐ स्फ्रें कृष्णमात्रे नमः। ॐ स्फ्रें कुलिशांगयै नमः। ॐ स्फ्रें कलायै नमः। ॐ स्फ्रें क्रींरूपायै नमः। ॐ स्फ्रें कुलगम्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कमलायै नमः। ॐ स्फ्रें कृष्णपूजितायै नमः। ॐ स्फ्रें कृशांगयै नमः। ॐ स्फ्रें किन्नर्यै नमः। ॐ स्फ्रें कत्र्यै नमः। ॐ स्फ्रें कलकण्ठ्यै नमः। ॐ स्फ्रें कार्तिक्यै नमः। ॐ स्फ्रें कम्बुकण्ठ्यै नमः। ॐ स्फ्रें कौलिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुमुदायै नमः। ॐ स्फ्रें कामजीविन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुलस्त्रियै नमः। ॐ स्फ्रें कीर्तिकायै नमः। ॐ स्फ्रें कृत्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कीर्त्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुलपालिकायै नमः। ॐ स्फ्रें कामदेवकलायै नमः। ॐ स्फ्रें कल्पलतायै

नमः। ॐ स्फ्रें कामांगवर्धिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुन्तायै नमः। ॐ स्फ्रें कुमुदप्रीतायै नमः। ॐ स्फ्रें कदम्बकुसुमोत्सुकायै नमः। ॐ स्फ्रें कादम्बिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कमलिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कृष्णानन्दप्रदायिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुमारी पूजनरतायै नमः। ॐ स्फ्रें कुमारीगणेशोभितायै नमः। ॐ स्फ्रें कुमारी रंजनरतायै नमः। ॐ स्फ्रें कुमारी व्रतधारिण्यै नमः। ॐ स्फ्रें कंकाल्यै नमः। ॐ स्फ्रें कमनीयायै नमः। ॐ स्फ्रें कामशास्त्रविशारदायै नमः। ॐ स्फ्रें कपाल खट्वांगधरायै नमः। ॐ स्फ्रें कालभैरवरूपिण्यै नमः। ॐ स्फ्रें कोटर्यै नमः। ॐ स्फ्रें कोटराक्ष्यै नमः। ॐ स्फ्रें काशीवासिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कैलासवासिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कात्यायन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कार्यकर्यै नमः। ॐ स्फ्रें काव्यशास्त्र प्रमोदिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कामाकर्षणरूपायै नमः। ॐ स्फ्रें कामपीठनिवासिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कंगिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें काकिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें क्रीडायै नमः। ॐ स्फ्रें कुत्सितायै नमः। ॐ स्फ्रें कलहप्रियायै नमः। ॐ स्फ्रें कुण्डगोलोद्भव प्राणायै नमः। ॐ स्फ्रें कौशिक्यै नमः। ॐ स्फ्रें कीर्तिवर्धिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कुम्भस्तन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कटाक्षायै

नमः। ॐ स्फ्रें काव्यायै नमः। ॐ स्फ्रें कोकनदप्रियायै नमः। ॐ स्फ्रें कान्तारवासिन्यै नमः। ॐ स्फ्रें कान्त्यै नमः। ॐ स्फ्रें कठिनायै नमः। ॐ स्फ्रें कृष्णवल्लभायै नमः।

होमद्रव्यम्– मंत्र को ऊर्जावान करने हेतु अन्त में कामनानुसार दशांश होम किया जाता है। केवल एक ही वस्तु से हवन करने का फल भिन्न होता है और कई द्रव्यों के मिश्रण करने से किये जाने वाले हवन का फल भिन्न होता है।

घी मधु से लिप्त मालती के पुष्पों की आहुति बृहस्पति से भी अधिक वागीशत्व प्रदान करती है। जूही के फूलों के होम से राजा लोग वश में हो जाते हैं। नागकेशर के साथ जूही के फूलों का होम करने से मेधावृद्धि एवं राजत्व प्राप्त होता है। माधवी के फूलों के होम से पृथ्वीप्राप्ति, चम्पा के फूलों से स्वर्णलाभ, आम के वृक्ष से लिपटी हुई लता के फूलों से बुद्धि की वृद्धि, मल्लिका से धनलाभ और कुन्द से कीर्त्ति प्राप्त होती है। बन्धूक से बन्धु–बान्धवों का प्रिय होता है और जवापुष्प से शत्रुओं का विनाश होता है। कमल के फूलों से आयु की वृद्धि, कुमुद के फूलों से कवित्व लाभ होता है। कदम्ब से व्याधिनाश, भटकटैया से वृद्धि तथा मयनफल से विजय होती है। अपराजिता के पुष्पों से साधक

सर्वांगसुन्दर हो जाता है। शेफालिका (म्यौड़ी या न्यौड़ी) से पुत्रलाभ कहा गया है। अशोक से शोक का नाश, मौलसिरी से कुल में सम्मानलाभ होता है। दूर्वा से धन-धान्य और सेमर के फूल से शत्रुनाश होता है। शिरीषपुष्प से प्रमदा, जयन्ती से जयलक्ष्मी, मदार के पुष्प से विद्वेषण, धतूर से रिपुमारण, कोविदार (कचनार) से बलप्राप्ति, परिजात से जय और उन्नति मिलती है।

श्रीफल (बेल) से लक्ष्मी प्राप्ति, नाररंग (नारंगी) से सौन्दर्य, कटहल से कान्तिमान, नारियल से वशित्व, नींबू से शत्रुनाश, आम से राज्यलाभ, जामुन से स्तम्भन, केला से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। कपित्थ (कैथ) से शत्रु का उच्चाटन और बेर के फल से युद्ध में बलवान होता है। खिरनी से पुत्रलाभ और द्राक्षा (मुनक्का या अंगूर) से मोक्ष मिलता है। गूलर से धर्मप्राप्ति, वट से सन्तानपूर्ति, जायफल होम से तीनों लोकों को वश में कर लेता है। कूष्माण्ड से ग्रहशान्ति, आंवले से वृद्धि, जम्भीरी नींबू से प्रभूत धन, बहेड़ा से मारण होता है। रुद्राक्ष से मोक्ष, हर्रे से पापनाश, लकुच (बड़हर) से युवति की प्राप्ति, ताल से शत्रुओं को पागल बनाया जाता है। महुआ से अधिक लक्ष्मी और करमर्द (करौना/ करौंदा) से बल की उन्नति मिलती है। सिन्दूर से मोहन, बिल्वपत्र व नागवल्ली (पान) के पत्ते से लक्ष्मी मिलती है। दूध से बने पदार्थ खीर आदि से जितनी सिद्धियां हैं सब मिलती है। मालपुआ और पूड़ी से क्रमशः लक्ष्मी और विद्या का लाभ होता है। त्रिकुट (सोंठ,

पीपर, मिर्च) से शत्रुओं का उच्चाटन होता है। नमक से विद्वेषण और बालों के होम से मरण जानना चाहिये। उल्लू और कौवे के पंख से महाविद्वेषण होता है। सरसो के तेल से हवन के द्वारा (होता) तीनों लोकों को वश में कर लेता है। धान, लावा पकाया गया अन्न और चावल सर्वकामप्रद है। खिचड़ी और लडडू से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है।

यव से होम करने पर दीर्घायु, मूंग से अन्नपूर्णा, धान या चावल से होम करने पर अधिक सम्पत्ति, तिल के होम से सर्वसिद्धि, उड़द के होम से एक मास में शत्रुनाश, सांवां से तपस्या का लाभ, नीवार (तिन्नी) से उत्तम तेज, कोदव से सर्वाकर्षण, कुल्माष (कुलथी) से रोगनाश, पीली सरसो और अन्य सरसों से सर्वसिद्धि मिलती है। कपूर से उत्तम कीर्ति, कस्तूरी से विद्याधरत्व, देवत्व और सिद्धत्व प्राप्त होता है। कुंकुम से रूपवत्ता और चन्दन से वाग्मिता मिलती है। अगुरु से अष्टसिद्धि और गोरोचन से विजय प्राप्त होती है।

समिधा भेद- पलाश की समिधा शुद्ध और सब कार्यों में श्रेष्ठ मानी गयी है। बेल की समिधा से धनलाभ और खैर की समिधा से राजा वश में होता है। बरगद की समिधा से कामिनी की प्राप्ति, पीपल से विद्या लाभ एवं गूलर की समिधा से खेचरत्व की

प्राप्ति होती है। चिचिड़ा से सर्वज्ञता, आंवले से राजत्व, धतूर से शत्रु की मृत्यु, मुनिवृक्ष (आमवृक्ष) से स्थिर बुद्धि मिलती है।

श्रीकामकलाकाली सहस्रनामस्तोत्रम्- जो प्रतिदिन इस स्तोत्र को पढ़ता या सुनता है, उसके सभी दोष नष्ट हो जाते है एवं सर्व प्रकार से मंगल होता है। युद्धकाल, धनहानि, वाद विवाद, ग्रहपीड़ा, शत्रुभय, मृत्युसंकट, अल्पायु, रोगशोक, प्रेतबाधा या अन्य विपत्तिकाल से मुक्ति हेतु इसका चिन्तन साधक को अभय प्रदान करता है।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीकामकलाकालीसहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीत्रिपुरघ्नऋषिरनुष्टुप् छन्दस्त्रि, जगन्मयरूपिणी भगवती श्रीकामकलाकाली देवता, क्लीं बीजं, स्फ्रों शक्तिः, हूं कीलकं, क्ष्रौं तत्त्वं श्रीकामकलाकालीसहस्रनामस्तोत्रपाठे जपे विनियोगः।

सहस्रनाम- ॐ क्लीं। कामकलाकाली। कालरात्रिः। कपालिनी। कात्यायनी। कल्याणि। कालाकारा। करालिनी। उग्रमूर्ति। महाभीमा। घोररावा। भयंकरा। भूतिदा। भयहन्त्री। भवबन्धविमोचिनी। भव्या। भवानी। भोगाढ्या। भुजंगपतिभूषणा। महामाया। जगद्धात्री। पावनी। परमेश्वरी। योगमाता। योगगम्या। योगिनी। योगिपूजिता। गौरी। दुर्गा। कालिका। महाकल्पान्तनर्त्तकी। अव्यया। जगदादि। विधात्री।

कालमर्दिनी। नित्या। वरेण्या। विमला। देवाराध्या। अमितप्रभा। भारुण्डा। कोटरी। शुद्धा। चंचला। चारुहासिनी। अग्राह्या। अतीन्द्रिया। अगोत्रा। चर्चरा। ऊर्ध्वशिरोरुहा। कामुकी। कमनीया। श्रीकण्ठमहिषी। शिवा। मनोहरा। माननीया। मतिदा। मणिभूषणा। श्मशाननिलया। रौद्रा। मुक्तकेशी। अट्टहासिनी। चामुण्डा। चण्डिका। चण्डी। चार्वंगी। चरितोज्जवला। घोरानना। धूम्रशिखा। कम्पना। कम्पितानना। वेपमानतनु। भीदा। निर्भया। बाहुशालिनी। उल्मुकाक्षी। सर्पकर्णी। विशोका। गिरिनन्दिनी। ज्योत्स्नामुखी। हास्यपरा। लिंगा। लिंगधरा। सती। अविकारा। महाचित्रा। चन्द्रवक्त्रा। मनोजवा। अदर्शना। पापहरा। श्यामला। मुण्डमेखला। मुण्डावतंसिनी। नीला। प्रपन्नानन्ददायिनी। लघुस्तनी। लम्बकुचा। घूर्णमाना। हरांगना। विश्वावासा। शान्तिकरी। दीर्घकेशी। अरिखण्डिनी। रुचिरा। सुन्दरी। कम्रा। मदोन्मत्ता। मदोत्करा। अयोमुखी। वह्निमुखी। क्रोधना। अभयदा। ईश्वरी। कुडम्बिका। साहसिनी। खंगकी। रक्तलेहिनी। विदारिणी। पानरता। रुद्राणी। मुण्डमालिनी। अनादिनिधना। देवी। दुर्निरीक्ष्या। दिगम्बरा। विद्युज्जिह्वा। महादंष्ट्रा। वज्रतीक्ष्णा। महास्वना। उदयार्कसमानाक्षी। विन्ध्यशैल। समाकृति। नीलोत्पलदलश्यामा। नागेन्द्राष्टकभूषणा। अग्निज्वालकृतावासा। फेत्कारिणी। अहिकुण्डला। पापघ्नी। पालिनी। पद्मा। पुण्या। पुण्यप्रदा। परा। कल्पान्ताम्भोदनिर्घोषा। सहस्रार्कसमप्रभा। सहस्रप्रेतराट्क्रोधा। सहस्रेशपराक्रमा। सहस्रधनदैश्वर्या। सहस्रांध्रिकराम्बिका।

सहस्रकालदुष्प्रेक्ष्या। सहस्रेन्द्रियसंचया। सहस्रभूमिसदना। सहस्राकाशविग्रहा। सहस्रचन्द्रप्रतिमा। सहस्रग्रहचारिणी। सहस्ररुद्रतेजस्का। सहस्रब्रह्मसृष्टिकृत्। सहस्रवायुवेगा। सहस्रफणकुण्डला। सहस्रयंत्रमथिनी। सहस्रोदधिसुस्थिरा। सहस्रबुद्धकरुणा। महाभागा। तपस्विनी। त्रैलोक्यमोहिनी। सर्वभूतदेवशंकरी। सुस्निग्धहृदया। घण्टाकर्णा। व्योमचारिणी। शंखिनी। चित्रिणी। ईशानी। कालसंकर्षिणी। जया। अपराजिता। विजया। कमला। कमलाप्रदा। जनयित्री। जगद्योनिर्हेतुरूपा। चिदात्मिका। अप्रमेया। दुराधर्षा। ध्येया। स्वच्छन्दचारिणी। शातोदरी। शाम्भविनी। पूज्या। मानोन्नता। अमला। ॐकाररूपिणी। ताम्रा। बालार्कसमतारका। चलज्जिह्वा। भीमाक्षी। महाभैरवनादिनी। सात्त्विकी। राजसी। तामसी। घर्घरा। अचला। माहेश्वरी। ब्राह्मी। कौमारी। मानिनीश्वरा। सौपर्णी। वायवी। ऐन्द्री। सावित्री। नैर्ऋती। कला। वारुणी। शिवदूती। सौरी। सौम्या। प्रभावती। वाराही। नारसिंही। वैष्णवी। ललिता। स्वरा। मैत्र्यार्य्यम्णी। पौष्णी। त्वाष्ट्री। वासवी। उमारति। राक्षसी। पावनी। रौद्री। दास्री। रोदसी। उदुम्बरी। सुभगा। दुर्भगा। दीना। चंचुरीका। यशस्विनी। महानन्दा। भगानन्दा। पिच्छिला। भगमालिनी। अरुणा। रेवती। रक्ता। शकुनी। श्येनतुण्डिका। सुरभी। नन्दिनी। भद्रा। बला। अतिबला। अमला। अलूपी। लम्बिका। खेटा। लेलिहाना। अन्त्रमलिनी। वैनायिकी।

वेताली। त्रिजटा। भृकुटी। सती। कुमारी। युवती। प्रौढा। विदग्धा। घस्मरा। जरती। रोचना। भीमा। दोलमाला। पिचिण्डिला। अलम्बाक्षी। कुम्भकर्णी। कालकर्णी। महासुरी। घण्टारवा। गोकर्णी। काकजंघा। मूषिका। महाहनु। महाग्रीवा। लोहिता। लोहिताशनी। कीर्त्ति। सरस्वती। लक्ष्मी। श्रद्धा। बुद्धि। क्रिया। स्थिति। चेतना। विष्णु। माया। गुणातीता। निरन्जना। निद्रा। तन्द्रा। स्मिता। छाया। जृम्भा। क्षुत्। अशनायिता। तृष्णा। क्षुधा। पिपासा। लालसा। क्षान्ति। विद्या। प्रज्ञा। स्मृति। कान्ति। इच्छा। मेधा। प्रभा। चिति। धरित्री। धरणी। धन्या। धोरणी। धर्मसन्तति। हालाप्रिया। हाररति। हारिणी। हरिणेक्षणा। चण्डयोगेश्वरी। सिद्धिकराली। परिडामरी। जगदान्या। जनानन्दा। नित्यानन्दमयी। स्थिरा। हिरण्यगर्भा। कुण्डलिनी। ज्ञान। धैर्य। खेचरी। नगात्मजा। नागहारा। जटाभारा। प्रतर्दिर्दनी। खंगिनी। शूलिनी। चक्रवती। बाणवती। क्षिति। घृणि। धर्त्री। नालिका। कर्त्री। मत्यक्षमालिनी। पाशिनी। पर्शुहस्ता। नागहस्ता। धनुर्धरा। महामुद्गरहस्ता। शिवापोतधरा। नारखर्परिणी। लम्बत्कचमुण्डप्रधारिणी। पद्मावती। अन्नपूर्णा। महालक्ष्मी। सरस्वती। दुर्गा। विजया। घोरा। महिषमर्दिनी। धनलक्ष्मी। अश्वारूढ। जयभैरवी। शूलिनी। राजमातंगी। राजराजेश्वरी। त्रिपुटा। उच्छिष्टचाण्डालिनी। अघोरा। त्वरिता। राज्यलक्ष्मी। जय। महाचण्डयोगेश्वरी। गुह्या। महाभैरवी। विश्वलक्ष्मी। अरुन्धती। यंत्रप्रमथिनी। चण्डयोगेश्वरी। अलम्बुषा। किराती। महाचण्डभैरवी। कल्पवल्लरी। त्रैलोक्यविजया। सम्पत्प्रदा।

मन्थानभैरवी। महामंत्रेश्वरी। वज्रप्रस्तारिणी। अंगचर्पटा। जयलक्ष्मी। चण्डरूपा। जलेश्वरी। कामदायिनी। स्वर्णकूटेश्वरी। रुण्डा। मर्मरी। बुद्धिवर्धिनी। वार्त्ताली। चण्डवार्त्ताली। जयवार्त्तालिका। उग्रचण्डा। श्मशानोग्रा। चण्डा। रुद्रचण्डिका। अतिचण्डा। चण्डवती। प्रचण्डा। चण्डनायिका। चैतन्यभैरवी। कृष्णा। मण्डली। तुम्बुरेश्वरी। वाग्वादिनी। मुण्डमधुमती। अनर्घ्या। पिशाचिनी। मंजीरा। रोहिणी। कुल्या। तुंगा। पर्णेश्वरी। वरा। विशाला। रक्तचामुण्डा। अघोरा। चण्डवारुणी। धनदा। त्रिपुरा। वागीश्वरी। जयमंगला। दैगम्बरी। कुब्जिका। कुडुक्का। कालभैरवी। कुक्कुटी। संकटा। वीरा। कर्प्पटा। भ्रमराम्बिका। महार्णवेश्वरी। भोगवती। लंकेश्वरी। पुलिन्दी। शबरी। म्लेच्छी। पिंगला। शबरेश्वरी। मोहिनी। सिद्धिलक्ष्मी। बाला। त्रिपुरसुन्दरी। उग्रतारा। एकजटा। महानीलसरस्वती। त्रिकण्टकी। छिन्नमस्ता। महिषघ्नी। जयावहा। हरसिद्धा। अनंगमाला। फेत्कारी। लवणेश्वरी। चण्डेश्वरी। नाकुली। हयग्रीवेश्वरी। कालिन्दी। वज्रवाराही। महानीलपताका। हंसेश्वरी। मोक्षलक्ष्मी। भूतिनी। जातरेतसा। शातकर्णा। महानीला। वामा। गुह्येश्वरी। भ्रमि। एका। अनंशा। अभया। तार्क्षी। बाभ्रवी। डामरी। कोरंगी। चर्च्चिका। विन्ना। संशिका। ब्रह्मवादिनी। त्रिकालवेदिनी। नीललोहिता। रक्तदन्तिका। क्षेमंकरी। विश्वरूपा। कामाख्या। कुलकुट्टनी। कामांकुशा। वेशिनी। मायूरी। कुलेश्वरी। इभाक्षी। घोणकी। शार्गी। भीमा। देवी। वरप्रदा। महामारी। मंगला। हाटकेश्वरी। किराती। शक्तिसौपर्णी। बान्धवी। चण्डखेचरी।

निस्तन्द्रा। भवभूति। ज्वालाघण्टा। अग्निमर्दिनी। सुरंगा। कौलिनी। रम्या। नटी। नारायणी। धृति। अनन्ता। पुंजिका। जिह्मा। धर्माधर्मप्रवर्त्तिका। वन्दिनी। वन्दनीया। वेला। अहस्करिणी। सुधा। अरणी। माधवी। गोत्रा। पताका। वाङ्मयी। श्रुति। गूढा। त्रिगूढा। विस्पष्टा। मृगांका। निरिन्द्रिया। मेना। आनन्दकरी। बोधी। त्रिनेत्रा। वेदवाहना। कलस्वना। तारिणी। सत्यप्रिया। असत्यप्रिया। अजडा। एकवक्त्रा। महावक्त्रा। बहुवक्त्रा। घनानना। इन्दिरा। काश्यपी। ज्योत्स्ना। शवारूढा। तनूदरी। महाशंखधरा। नागोपवीतिनी। अक्षताशया। निरिन्धना। धराधारा। व्याधिघ्नी। कल्पकारिणी। विश्वेश्वरी। विश्वधात्री। विश्वेशी। विश्ववन्दिता। विश्वा। विश्वात्मिका। विश्वव्यापिका। विश्वतारिणी। विश्वसंहारिणी। विश्वहस्ता। विश्वोपकारिका। विश्वमाता। विश्वगता। विश्वातीता। विरोधिता। त्रैलोक्यत्राणकर्त्री। कूटाकारा। कटकंटा। क्षामोदरी। क्षेत्रज्ञा। क्षयहीना। क्षरवर्जिता। क्षपा। क्षोभकरी। क्षेम्या। अक्षोभ्या। क्षेमदुघा। क्षिया। सुखदा। सुमुखी। सौम्या। स्वंगा। सुरपरा। सुधी। सर्वान्तर्यामिनी। सर्वा। सर्वाराध्या। समाहिता। तपिनी। तापिनी। तीव्रा। तपनीया। नाभिगा। हैमी। हैमवती। ऋद्धि। वृद्धि। ज्ञानप्रदा। नरा। महाजटा। महापादा। महाहस्ता। महाहनु। महाबला। महाशेषा। महाधैर्या। महाघृणा। महाक्षमा। पुण्यपापध्वजिनी। घुर्घुरारवा। डाकिनी। शाकिनी। रम्या। शक्ति। शक्तिस्वरूपिणी। तमिस्रा। गन्धरा। शान्ता। दान्ता। क्षान्ता। जितेन्द्रिया। महोदया। ज्ञानिनी। इच्छा। विरागा।

सुखिताकृति। वासना। वासनाहीना। निवृत्ति। र्निवृति। कृति। अचला। हेतु। उन्मुक्ता। जयिनी। संस्मृति। च्युता। कपर्द्दिनी। मुकुटिनी। मत्ता। प्रकृति। ऊर्जिता। सदसत्साक्षिणी। स्फीता। मुदिता। करुणामयी। पूर्वा। उत्तरा। पश्चिमा। दक्षिणा। विदिगुद्गता। आत्मारामा। शिवारामा। रमणी। शंकरप्रिया। वरेण्या। वरदा। वेणी। स्तम्भिनी। आकर्षिणी। उच्चाटनी। मारणी। द्वेषिणी। वशिनी। मही। भ्रमणी। भारती। भामा। विशोका। शोकहारिणी। सिनीवाली। कुहू। राका। अनुमति। पद्मिनी। ईतिह्रत्। सावित्री। वेदजननी। गायत्री। आहुति। साधिका। चण्डाट्टहासा। तरुणी। भूर्भुवस्वःकलेवरा। अतनु। अतनुप्राणदात्री। मातंगगामिनी। निगमा। अब्धिमणि। पृथिवी। जन्ममृत्युजरौषधी। प्रतारिणी। कलालापा। वेद्या। छेद्या। वसुन्धरा। अप्रक्षुणा। अवासिता। कामधेनु। वान्छितदायिनी। सौदामिनी। मेघमाला। शर्वरी। सर्वगोचरा। डमरु। डमरुका। निःस्वरा। परिनादिनी। आहतात्मा। हता। नादातीता। बिलेशया। परा। अपरा। पश्यन्ती। मध्यमा। वैखरी। प्रथमा। जघन्या। मध्यस्था। अन्तविकासिनी। पृष्ठस्था। पुरःस्था। पार्श्वस्था। ऊर्ध्वतलस्थिता। नेदिष्ठा। दविष्ठा। बहिःष्ठा। गुहाशया। अप्राप्या। बृंहिता। पूर्णा। पुण्यैर्वेद्या। अनामया। सुदर्शना। त्रिशिखा। बृहती। सन्तति। विभा। फेत्कारिणी। दीर्घसृक्का। भावना। भवल्लभा। भागीरथी। जाह्नवी। कावेरी। यमुना। शिप्रा। गोदावरी। वेल्ला। विपाशा। नर्मदा। धुनी। त्रेता। स्वाहा। सामिधेनी। स्रुक्। स्रुवा। ध्रुवावसु। गर्विता। मानिनी।

मेना। नन्दिता। नन्दनन्दिनी। नारायणी। नारकघ्नी। रुचिरा। रणशालिनी। आधारणा। आधारतमा। धर्माध्वन्या। धनप्रदा। अभिज्ञा। पण्डिता। मूका। बालिशा। वाग्वादिनी। ब्रह्मवल्ली। मुक्तिवल्ली। सिद्धिवल्ली। विपह्न्वी। आह्लादिनी। जितामित्रा। साक्षिणी। पुनराकृति। किर्म्मरी। सर्वतोभद्रा। स्वर्वेदी। मुक्तिपद्धति। सुषमा। चन्द्रिका। वन्या। कौमुदी। कुमुदाकरा। त्रिसंध्या। आम्नायसेतु। चर्चा। ऋच्छा। परिनैष्ठिकी। कला। काष्ठा। तिथि। स्तारा। संक्रान्ति। विषुवत्। मंजुनादा। महावल्गु। भग्नभेरीस्वना। अरटा। चिन्ता। सुप्ति। सुषुप्ति। तुरीया। तत्त्वधारणा। मृत्युंजया। मृत्युहरी। मृत्युमृत्युविधायिनी। हंसी। परमहंसी। बिन्दुनादान्तवासिनी। वैहायसी। त्रैदशी। भैमी। वासातनी। दीक्षा। शिक्षा। अनूढा। कंकाली। तैजसी। सुरी। दैत्या। दानवी। नरी। नाथा। सुरी। इत्वरी। माध्वी। स्वना। स्वरा। रेखा। निष्कला। निर्ममा। मृति। महती। विपुला। स्वल्पा। क्रूरा। क्रूराशया। उन्माथिनी। धृतिमति। वामनी। कल्पचारिणी। वाडवी। वडवा। अश्वोढा। कोला। पितृवनालया। प्रसारिणी। विशारा। दर्पिता। दर्पणप्रिया। उत्ताना। अधोमुखी। सुप्ता। वन्चनी। आकुन्चनी। त्रुटि। क्रादिनी। यातनादात्री। दुर्गा। दुर्गतिनाशिनी। धराधरसुता। धीरा। धराधरकृतालया। सुचरित्री। तथात्री। पूतना। प्रेतमालिनी। रम्भा। उर्वशी। मेनका। कलिहृत्। कालकृत्। कशा। हरीष्टदेवी। हेरम्बमाता। हर्यक्षवाहना। शिखण्डिनी। कोण्डपिनी। वेतुण्डी। मंत्रमयी। वज्रेश्वरी। लोहदण्डा। दुर्विज्ञेया। दुरासदा। जालिनी। जालपा। याज्या। भगिनी।

भगवती। भौजंगी। तुर्वरा। बभ्रु। महनीया। मानवी। श्रीमती। श्रीकरी। गार्द्धी। सदानन्दा। गणेश्वरी। असन्दिग्धा। शाश्वता। सिद्धा। सिद्धेश्वरीडिता। ज्येष्ठा। श्रेष्ठा। वरिष्ठा। कौशाम्बी। भक्तवत्सला। इन्द्रनीलनिभा। नेत्री। नायिका। त्रिलोचना। वार्हस्पत्या। भार्गवी। आत्रेयी। आंगिरसी। धुर्याधिहर्त्री। धारित्री। विकटा। जन्ममोचिनी। आपदुत्तारिणी। दृप्ता। प्रमिता। मितवर्जिता। चित्ररेखा। चिदाकरा। चंचलाक्षी। चलत्पदा। वलाहकी। पिंगसटा। मूलभूता। वनेचरी। खगी। करन्धमा। ध्माक्षी। संहिता। केररीन्धना। अपुनर्भविनी। वान्तरिणी। यमगंजिनी। वर्णातीता। आश्रमातीता। मृडानी। मृडवल्लभा। दयाकारी। दमपरा। दम्भहीना। आहृतिप्रिया। निर्वाणदा। निर्बन्धा। भावा। भावविधायिनी। नैःश्रेयसी। निर्विकल्पा। निर्बिजा। सर्वबीजिका। अनाद्यन्ता। भेदहीना। बन्धोन्मूलिनी। अबाधिता। निराभासा। मनोगम्या। सायुज्या। अमृतदायिनी।

फलश्रुति– इतीदं नामसहस्रं नामकोटिशताधिकम्। देव्याः कामकलाकाल्या मया ते प्रतिपादितम्।।

नानेन सदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु विद्यते। यद्यप्यमुष्य महिमा वर्णितुं नैव शक्यते।।

प्ररोचनातया कश्चित्तथापि विनिगद्यते। प्रत्यहं य इदं देवि कीर्त्तयेद्वा शृणोति वा।।

गुणाधिक्यमृते कोऽपि दोषो नैवोपजायते। अशुभानि क्षयं यान्ति जायन्ते मंगलान्यथ।।

पारत्रिकामुष्मिको द्वौ लोकौ तेन प्रसाधितौ। ब्राह्मणो जायते वाग्मी वेदवेदांगपारगः।।
ख्यातः सर्वासु विद्यासु धनवान् कविपण्डितः। युद्धे जयी क्षत्रियः स्याद् दाता भोक्ता रिपुन्जयः।।
आहर्ता चाश्वमेधस्य भाजनं परमायुषाम्। समृद्धो धनधान्येन वैश्यो भवति तत्क्षणात्।।
नानाविधपशूनां हि समृद्ध्या स समृद्धते। शूद्रः समस्तकल्याणमाप्नोति श्रुतिकीर्तनात्।।
भुंक्ते सुखानि सुचिरं रोगशोकौ परित्यजन्। एवं नार्य्यापि सौभाग्यं भर्तृहार्दं सुतानपि।।
प्राप्नोति श्रवणादस्य कीर्तनादपि पार्वति। स्वस्वाभीष्टमथान्येऽपि लभन्तेऽस्य प्रसादतः।।
आप्नोति धार्मिको धर्मानर्थानाप्नोति दुर्गतः। मोक्षार्थिनस्तथा मोक्षं कामुकाः कामिनीं वराम्।।
युद्धे जयं नृपाः क्षीणाः कुमार्य्यः सत्पतिं तथा। आरोग्यं रोगिणश्चापि तथा वंशार्थिनः सुतान्।।
जयं विवादे कलिकृत् सिद्धीः सिद्धिच्छुरुत्तमाः। वियुक्ता बन्धुभिः संगं गतायुश्चायुषान्चयम्।।
सदा य एतत्पठति निशीथे भक्तिभावितः। तस्यासाध्यमथाप्राप्यं त्रैलोक्ये नैव विद्यते।।

कीर्त्तिं भोगान् स्त्रियः पुत्रान् धनं धान्यं हयान् गजान्। ज्ञातिश्रेष्ठ्यं पशून् भूमिं राजवश्यं च मान्यताम्।।
लभते प्रेयसि क्षुद्रजातिरप्यस्य कीर्त्तनात्। नास्य भीतिर्न दौर्भाग्यं नाल्पायुष्यं न रोगिता।।
न प्रेतभूताभिभवो न दोषो ग्रहजस्तथा। जायते पतितो नैव क्वचिदप्येष संकटे।।
यदीच्छसि परं श्रेयस्तर्त्तुं संकटमेव च। पठान्वहमिदं स्तोत्रं सत्यं सत्यं सुरेश्वरि।।
न सास्ति भूतले सिद्धिः कीर्त्तनाद् या न जायते। शृणु चान्यद्वरारोहे कीर्त्यमानं वचो मम।।
महाभूतानि पंचापि खान्येकादश यानि च। तन्मात्राणि च जीवात्मा परमात्मा तथैव च।।
सप्तार्णवाः सप्तलोका भुवनानि चतुर्दश। नक्षत्राणि दिशः सर्वाः ग्रहाः पातालसप्तकम्।।
सप्तद्वीपवती पृथ्वी जंगमाजंगमं जगत्। चराचरं त्रिभुवनं विद्याश्चापि चतुर्दश।।
सांख्यं योगस्तथा ज्ञानं चेतना कर्मवासना। भगवत्यां स्थितं सर्वं सूक्ष्मरूपेण बीजवत्।।
सा चास्मिन् नामसहस्रे स्तोत्रे तिष्ठति बद्धवत्। पठनीयं विदित्वैवं स्तोत्रमेतत् सुदुर्लभम्।।

देवीं कामकलाकालीं भजन्तः सिद्धिदायिनीम्। स्तोत्रं चादः पठन्तो हि साधयन्तीप्सितान् स्वकान्।।

उपर्युक्त समस्त नामों की संख्या किसी भी प्रकार से एक हजार नहीं हो रही है। नीचे लिखे गद्य सहस्रनाम को मिला देने से एक हजार से अधिक नाम हो जाते हैं। अतः गद्य का पाठ सहस्रनाम के आदि और अन्त में करने का निर्देश महाकालसंहिता में है। दो बार न कर सके तो अन्त में गद्य पाठ अवश्य पढ़ना चाहिये। गद्य पाठ करने से ही सहस्रनाम का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है।

कामकलाकाली गद्य सहस्रनाम– 'ॐ फ्रें जय जय कामकलाकालि कपालिनी सिद्धिकराली सिद्धिविकरालि महाबलिनी त्रिशूलिनि नरमुण्डमालिनि शववाहिनि कात्यायनि महाट्टहासिनी सृष्टिस्थितिप्रलयकारिणि दितिदनुजमारिणि श्मशानचारिणि। महाघोररावे अध्यासितदावे अपरिमितबलप्रभावे। भैरवीयोगिनी डाकिनीसहवासिनी जगद्भासिनी स्वपदप्रकाशिनी। पापौघहारिणि आपदुद्धारिणि अपमृत्युवारिणि। बृहन्मद्यमानोदरि सकलसिद्धिकरि चतुर्दशभुवनेश्वरि। गुणातीतपरम सदाशिवमोहिनी अपवर्गरसदोहिनी रक्तार्णवलोहिनि। अष्टनागराज भूषितभुजदण्डे आकृष्टकोदण्डे परमप्रचण्डे। मनोवागगोचरे मखकोटि मंत्रमयकलेवरे महाभीषणतरे प्रचलजटाभार भास्वरे सजलजलदमेदुरे जन्ममृत्युपाशभिदुरे। सकलदैवतमयसिंहासनाधिरूढे गुह्याति गुह्य परापर शक्ति तत्त्वरूढे वाङ्मयीकृतमूढे। प्रकृत्यपरशिव

निर्वाणसाक्षिणी त्रिलोकीरक्षणि दैत्यदानवभक्षिणि। विकट दीर्घदंष्ट्रसन्चूर्णित कोटिब्रह्मकपाले चन्द्रखण्डांकितभाले देहप्रभाजितमेघजाले। नवपंचचक्रनयिनि महाभीमषोडशशयिनि सकलकुलाकुलचक्रप्रवर्त्तिनि निखिलरिपुदलकर्त्तिनि महामारीभयनिवर्त्तिनि लेलिहानरसनाकरालिनि त्रिलोकीपालिनि त्रयस्त्रिंशत्कोटि शस्त्रास्त्रशालिनि। प्रज्वलप्रज्वलनलोचने भवभयमोचने निखिलागमादेशित सुष्ठु रोचने। प्रपंचातीत निष्कलतुरीयाकारे अखण्डानन्दाधारे निगमागमसारे। महाखेचरीसिद्धिविधायिनि निजपदप्रदायिनि महामायिनी घोराट्टहाससन्त्रासितत्रिभुवने चरणकमलद्वय विन्यासखर्व्वीकृतावने विहितभक्तावने।

ॐ क्लीं क्रों स्फ्रों हूं ह्रीं छ्रीं स्त्रीं फ्रें भगवति प्रसीद प्रसीद जय जय जीव जीव ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हस हस नृत्य नृत्य क छ भगमालिनी भगप्रिये भगातुरे भगांकिते भगरूपिणि भगप्रदे भगलिंगद्राविणि। संहारभैरवसुरतरसलोलुपे व्योमकेशि पिंगकेशि महाशंखसमाकुले खर्प्परविहस्तहस्ते रक्तार्णवद्वीपप्रिये मदनोन्मादिनी। शुष्कनरकपालमालाभरणे विद्युत्कोटिसमप्रभे नरमांसखण्डकवलिनि। वमदग्निमुखि फेरुकोटिपरिवृते करतालिकात्रासितत्रिविष्टपे। नृत्यप्रसारित पादाघातपरिवर्तितभूवलये। पदभारावनम्री कृतकमठशेषाभोगे। कुरुकुल्ले कुन्चतुण्डि रक्तमुखि यमघण्टे चर्च्चिके दैत्यासुर दैत्यराक्षस दानवकुष्माण्ड प्रेतभूत डाकिनी विनायक

स्कन्दघोणक क्षेत्रपाल पिशाच ब्रह्मराक्षस वेताल गुह्यकसर्प्प नागग्रह नक्षत्रोत्पात चौराग्निस्वापद युद्धवज्रोपलाश निवर्षविद्युन्मेघ विषोपविष कपट कृत्याभिचार द्वेषवशीकरणोच्चाटनोन्मादापस्मार भूतप्रेत पिशाचावेशनदनदी समुद्रावर्त्त कान्तारघोरान्धकार महामारी बालग्रहहिंस्र सर्वस्वापहारिमाया विद्युद्दस्युवन्चक दिवाचर रात्रिंचर संध्याचर शृंगिनखिदंष्ट्रि विद्युदुल्कारण्यदरप्रान्तरादि नानाविधमहोपद्रवभंजनि सर्वमंत्रतंत्रयंत्र कुप्रयोगप्रमर्द्दिनी षडाम्नायसमयविद्याप्रकाशिनि श्मशानाध्यासिनी। निजबल प्रभाव पराक्रमगुण वशीकृतकोटि ब्रह्माण्डवर्तिभूतसंघे। विराड्रूपिणि सर्वदेवमहेश्वरि सर्वजनमनोरन्जिनी सर्वपापप्रणाशिनि अध्यात्मिकाधि दैविकाधि भौतिकादि विविधहृदयाधि निर्द्दलिनि कैवल्यनिर्वाणबलिनि दक्षिणकालि भद्रकालि चण्डकालि कामकलाकालि कौलाचारव्रतिनि कौलाचारकूजिनि कुलधर्मसाधिनि जगत्कारणकारिणि महारौद्रि रौद्रवतारे अबीजे नानाबीजे जगद्बीजे कालेश्वरि कालातीते त्रिकालस्थायिनि महाभैरवे भैरवगृहिणि जननि जनजननिवर्त्तिनि प्रलयानलज्वालाजालजिह्वे विखर्वोरु फेरुपोतलालिनि मृत्युंजयहृदयानन्दकरि विलोलव्याल कुण्डल उलूक पक्षच्छत्र महाडामरि नियुतवक्त्रबाहुचरणे सर्वभूतदमनि नीलान्जनसमप्रभे योगीन्द्रहृदयाम्बुजासन स्थितनीलकण्ठदेहार्द्धहारिणि षोडशकलान्तवासिनि हकारर्द्धचारिणि कालसंकर्षिणि कपालहस्ते मदघूर्णितलोचने निर्वाणदीक्षाप्रसादप्रदे निन्दानन्दाधिकारिणि मातृगणमध्यचारिणि त्रयस्त्रिंशत्कोटि त्रिदशतेजोमयविग्रहे

प्रलयाग्निरोचिनि विश्वकर्त्रि विश्वाराध्ये विश्वजननि विश्वसंहारिणि विश्वव्यापिके विश्वेश्वरि निरूपमे निर्विकारे निरन्जने निरीहे निस्तरंगे निराकारे परमेश्वरि परमानन्दे परापरे प्रकृतिपुरुषात्मिके प्रत्ययगोचरे प्रमाणभूते प्रणवस्वरूपे संसारसारे सच्चिदानन्दे सनातनि सकले सकलकलातीते सामरस्यसमयिनि केवले कैवल्यरूपे कल्पनातिगे काललोपिनि कामरहिते कामकलाकालि भगवति।

ॐ ख्फ्रें ह्सौः सौः श्रीं ऐं ह्रौं क्रों स्फ्रों सर्वसिद्धिं देहि देहि मनोरथान् पूरय पूरय मुक्तिं नियोजय नियोजय भवपाशं समुन्मूलय समुन्मूलय जन्ममृत्यु तारय तारय परविद्यां प्रकाशय प्रकाशय अपवर्गं निर्माहि निर्माहि संसारदुःखं यातनां विच्छेदय विच्छेदय पापानि संशमय संशमय चतुर्वर्गं साधय साधय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं यान् वयं द्विष्मो ये चास्मान् विद्विषन्ति तान् सर्वान् विनाशय विनाशय मारय मारय शोषय शोषय क्षोभय क्षोभय मयि कृपां निवेशय निवेशय फ्रें ख्फ्रें ह्स्फ्रें हसख्फ्रें हूं स्फ्रों क्लीं ह्रीं जय जय चराचरात्मक ब्रह्माण्डोदरवर्त्ति भूतसंघाराधिते प्रसीद प्रसीद तुभ्यं देवि नमस्ते नमस्ते नमस्ते।'

फलश्रुति– इतीदं गद्य मुदितं मंत्ररूपं वरानने। सहस्रनामस्तोत्रस्य आदावन्ते च योजयेत्।।

अशक्नुवानौ द्वौ वारौ पठेच्छेष इमं स्तवम्। सहस्रनामस्तोत्रस्य तदैव प्राप्यते फलम्।।

अपठन् गद्यमेतत्तु तत्फलं न समाप्नुयात्। यत्फलं स्तोत्रराजस्य पाठेनाप्नोति साधकः।। तत्फलं गद्यपाठेन लभते नात्र संशयः।

।।महाकाली चालीसा।।

दोहा- जय जय सीताराम के मध्यवासिनी अम्ब।
देहु दर्श जगदम्ब अब, करो न मातु विलम्ब।।
जय तारा जय कालिका जय दश विद्या वृन्द।
काली चालीसा रचत एक सिद्धि कवि हिन्द।।
प्रातः काल उठ जो पढ़े, दुपहरिया या शाम।
दुःख दारिद्रता दूर हों सिद्ध होय सब काम।।

चौपाई- जय काली कंकाल मालिनी। जय मंगला महा कपालिनी।।
रक्तबीज बधकारिणि माता। सदा भक्त जनन की सुखदाता।।
शिरो मालिका भूषित अंगे। जय काली जय मद्य मतंगे।।
हर हृदयारविन्द सुविलासिनी। जय जगदम्बा सकल दुःख नाशिनी।।
ह्रीं काली श्रीं महाकराली, क्रीं कल्याणी दक्षिणाकाली।।
जय कलावती जय विद्यावती। जय तारा सुन्दरी महामति।।

देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट। होहु भक्त के आगे परगट।।

जय ॐ कारे जय हुंकारे। महा शक्ति जय अपरम्पारे।।

कमला कलियुग दर्प विनाशिनी। सदा भक्त जन के भयनाशिनी।।

अब जगदम्ब न देर लगावहु, दुःख दरिद्रता मोर हटावहु।।

जयति कराल कालिका माता। कालानल समान द्युतिगाता।।

जयशंकरी सुरेशि सनातनि। कोटि सिद्धि कवि मातु पुरातनि।।

कपर्दिनी कलि कल्प विमोचनि। जय विकसित नव नलिन विलोचनि।।

आनन्द करणि आनन्द निधाना। देहुमातु मोहि निर्मल ज्ञाना।।

करुणामृत सागर कृपामयी। होहु दुष्ट जन पर अब निर्दयी।।

सकल जीव तोहि परम पियारा। सकल विश्व तोरे आधारा।।

प्रलयकाल में नर्तन कारिणि। जय जननी सब जग की पालनि।।

महोदरी महेश्वरी माया। हिमगिरि सुता विश्व की छाया।।

स्वच्छन्द रद मारद धुनि माही। गर्जत तुम्ही और कोउ नाही।।

स्फुरति मणिगणाकर प्रताने। तारागण तू ब्योंम विताने।।

श्री धारे सन्तन हितकारिणी। अग्नि पाणि अति दुष्ट विदारिणि।।

धूम्र विलोचनि प्राण विमोचनि। शुम्भ निशुम्भ मथनि वरलोचनि।।

सहस भुजी सरोरुह मालिनी। चामुण्डे मरघट की वासिनी।।

खप्पर मध्य सुशोणित साजी। मोरहु माँ महिषासुर पाजी।।

अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका। सब एके तुम आदि कालिका।।

अजा एकरूपा बहुरूपा। अकथ चरित्र तव शक्ति अनूपा।।

कलकत्ता के दक्षिण द्वारे। मूरति तोर महेशि अपारे।।

कादम्बरी पानरत श्यामा। जय मातंगी काम के धामा।।

कमलासन वासिनी कमलायनि। जय श्यामा जय जय श्यामायनि।।

मातंगी जय जयति प्रकृति हे। जयति भक्ति उर कुमति सुमति हे।।

कोटिब्रह्म शिव विष्णु कामदा। जयति अंहिसा धर्म जन्मदा।।

जल थल नभमण्डल में व्यापिनी। सौदामिनि मध्य अलापिनि।।

झननन तच्छु मरिरिन नादिनि। जय सरस्वती वीणा वादिनी।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा।।

जय ब्रह्माण्ड सिद्धि कवि माता। कामाख्या और काली माता।।

हिंगलाज विन्ध्याचल वासिनि। अट्टाहासिनी अरु अघन नाशिनी।।

कितनी स्तुति करूँ अखण्डे। तू ब्रह्माण्डे शक्तिजितचण्डे।।

करहु कृपा सब पे जगदम्बा। रहहिं निशंक तोर अवलम्बा।।

चतुर्भुजी काली तुम श्यामा। रूप तुम्हार महा अभिरामा।।

खड्ग और खप्पर कर सोहत। सुर नर मुनि सबको मन मोहत।।

तुम्हारी कृपा पावे जो कोई। रोग शोक नहिं ताकहँ होई।।

जो यह पाठ करे चालीसा। तापर कृपा करहि गौरीशा।।

।।दोहा।।

जय कपालिनी जय शिवा। जय जय जय जगदम्ब।

सदा भक्तजन केरि दुःख। हरहु मातु अवलम्ब।।

बलिकर्म– पूजा के अन्त में देवता के निमित्त विशिष्ट सामग्री या बलि अर्पित करने का शास्त्रों में निर्देश है। वास्तव में विशेष प्रकार का कर्म किसी भी देवता की पूजा के अन्त में अवश्य करना चाहिये। इससे देवता की विशेष कृपा प्राप्त होती है। दक्षिणमार्ग मे देवता के निमित्त कुछ विशेष सामग्री या अन्न का समर्पण किया जाता है। इसके अतिरिक्त देवता के मूल मंत्र या गायत्री के 10 हजार जप करना, 1008 दीपदान करना अथवा देवता के मन्दिर में उनके अनुरूप वस्त्र आभूषण नैवेद्य अर्पित करना या महाकन्याभोज का आयोजन करनादि। वाममार्ग में पशु

एवं खड्ग की पूजा करने के पश्चात् मंत्रोच्चारण करते हुए उस पशु का वध किया जाता है। परन्तु बलि के नाम पर निर्दोष, असहाय, मूक पशुओं का उनकी इच्छा के विरुद्ध वध करना क्या सनातन धर्म एवं मानवता के दायरे में आता है; इसका उचित निर्णय किसी एक तंत्र या एक समाज के कथनानुसार नहीं किया जा सकता है।

कालीतंत्र मुख्यतः कौलाचार (वामाचार) मार्ग कहा जाता है। जिसमें पंचमकार (मद्य मांस मत्स्य मुद्रा मैथुन) विधान, जिनका विधिवत् देवता पूजा में प्रयोग किया जाता है। परन्तु कुछ विशिष्ट तंत्र, महापुराण, वेद, गीता, आध्यात्मिक सिद्धपुरुष इस विषय में कुछ और कहते हैं। जैसे-

महाकालसंहिता कामकलाकालीखण्ड में स्पष्ट है- 'अपने हाथ से पशु की हत्या कर साधक पशुयोनि को प्राप्त करता है।'

पद्मपुराण में लिखा है- 'पशु मारकर, यज्ञादि करके रुधिर का कीचड़ कर यदि स्वर्ग में जाया जाता है तो नरक में कौन जाता है?'

रुद्रयामलतंत्र के अनुसार कौलाचार का अभिप्राय है- जिस आचार में कुलस्त्री, कुलगुरु, तथा कुलदेवी की नित्य पूजा होती है, वही कुलाचार है।

विश्वकोष में लिखा है- देश, घर, सजातीय, पुरुष, गोत्र और शरीरको भी कुल कहते हैं। पृथ्वीतत्त्व जिसमें लीन हो जाता है उसे कौल कहते हैं।

गुरुगोरखनाथ कहते हैं- हे अवधूतो! मांस खाने से दया धर्म का नाश होता है, मदिरा पीने से प्राण में नैराश्य छाता है, भांग का प्रयोग करने से ध्यान ज्ञान खो जाता है और ऐसे प्राणी यम के दरबार में रोते हैं।

मनुस्मृति कहती है- 'पशु को मारने की आज्ञा देने वाला, उसके खण्ड-खण्ड करने वाला, मारने वाला, बेचने और मोल लेने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला- ये आठों घातक हैं।' 'जो प्रत्येक वर्ष सौ वर्ष तक अश्वमेध यज्ञ करता है और जो बिल्कुल ही मांस नहीं खाता, इन दोनों का पुण्यफल बराबर है।' 'मैं यहां जिसका मांस खाता हूं, परलोक में वह मुझे भी खायेगा। यही मांस का मांसत्व है।'

देवीभागवत में भी कौलाचार (वामाचार) को दुराचार कहा गया है। समस्त वेदों में भी वामाचार का कोई स्थान नहीं है। इसलिये ब्राह्मण वर्ग वामाचार का अनुसरण नहीं करता है।

महानिर्वाणतंत्र कहता है- काम और क्रोधरूपी दोनो विघ्नकारी पशुओं का बलिदान करके उपासना करनी चाहिये। यही शास्त्रोक्त बलिदान रहस्य है।

उच्च तंत्रों की परिभाषा में इन्द्रियों के विकारों को ही पशुतुल्य कहा जाता है; क्योंकि पशुओं में केवल इन्द्रियों का प्राबल्य अधिक होता है, बुद्धि विवेक और धर्म का नहीं। परन्तु मनुष्य बुद्धि, धैर्य, संयम एवं धर्माधर्म का ज्ञान रखता है। भैंस में क्रोध की प्रबलता है। बकरे में जिह्वा-इन्द्रिय प्रबल है। कबूतर में मैथुन-काम की अधिकता है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रिय-विकार भी ऐसी ही पशुओं की संज्ञाएं हैं। इन चंचल इन्द्रियों को शुद्धबनाकर बलिस्वरूप पराम्बा को समर्पित करना ही सर्वश्रेष्ठ बलि है।

श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं- "वेदो ने चाहे कितनी ही बातें क्यों न कही हों और विविध प्रकार के विधि-भेद क्यों न बतलाये हों, परन्तु उनमें से केवल वे ही बातें हमें स्वीकार करनी चाहिये जो हमारे लिये हितकर हों। जब सूर्य का उदय होता है, तब सभी रास्ते प्रकाशित हो उठते हैं। पर भला क्या हम उन सभी रास्तों पर चलते हैं? यदि सारी की सारी पृथ्वी जलमग्न हो जाये, तो भी हमें उसमें से केवल आवश्यकतानुसार ही जल ग्रहण करना चाहिये। इसी प्रकार ज्ञानिजन वेदार्थ का चिन्तन तो करते ही करते

हैं, पर वे उसका वही सारतत्त्व ग्रहण करते हैं, जो उनके लिये अत्यावश्यक एवं शाश्वत है।''

सत्य तो यह है कि ईश्वर को किसी तंत्र, सामग्री, वस्तु अथवा कर्मकाण्ड से प्रसन्न नहीं किया जा सकता है। अगर ऐसा होता तो मन्द बुद्धि एवं निर्धन मनुष्य ईश्वर का साक्षात्कार कभी न कर पाते। इसके अतिरिक्त इस पृथ्वी या सम्पूर्ण संसार में ऐसी कोई दुर्लभ सामग्री या वस्तु नहीं है, जिससे ईश्वर को संतुष्ट किया जा सके। वो तो ईश्वर अपने भक्त के द्वारा प्रेमपूर्वक अर्पित की हुई साधारण सी सामग्री या वस्तु को अमृततुल्य समझकर ग्रहण कर लेते हैं।

स्वयं भगवती द्वारा पशु बलि निषेध (सत्य घटना)- मद्रासप्रान्त के ब्राह्मणकुमार श्रीयुत शोमयाजूल नियमपूर्वक भगवती की उपासना करते थे। उनके परिवार में कई पुश्तों से दक्षिणमार्ग के अनुसार शक्ति उपासना होती आ रही थी। उसी परम्परा के अनुसार प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्र में विशेष पूजा करने लगे। एक बार शोमयाजूलजी शारदीय पूजा समाप्त होने के पश्चात् ब्राह्मण भोजन का आयोजन करने में लगे थे। तब इन्हें भगवती ने साक्षात् दर्शन देकर कहा कि 'इस बार तुमको मुझे महिष बलि देनी चाहिये। शोमयाजूलजी महिष बलि का नाम सुनते ही कांप उठे। उन्होंने बड़ी दृढ़ता के साथ भगवती के प्रस्ताव का विरोध किया और

स्पष्ट शब्दों में पशु बलि देने से मना कर दिया। उन्होंने भगवती से निवेदन किया, 'यदि आप पशु बलि लेने पर उद्यत हैं तो मैं आज से आपकी उपासना का ही त्याग करता हूं। उस दिन से वास्तव में उन्होंने शक्ति उपासना का त्याग कर दिया। इस तरह दो महीने बिना पूजा-पाठ के बीत गये, भक्त अपनी बात पर अटल रहा। तब माता भगवती ने पुनः दर्शन देकर कहा- 'मैंने केवल तुम्हारी परीक्षा के लिये ही पशुबलि मांगी थी। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि तुम इस कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण हुए; मेरी उपासना को त्याग दिया, किन्तु पशु बलि देना स्वीकार न किया। इसके बाद शोमयाजूल पूर्ववत् भगवती उपासना करने लगे। (कल्याणअंक शक्तिअंक)

वास्तव में धर्म में इसी प्रकार अटल आस्था होनी चाहिये और स्वयं देवता के कहने पर भी धर्मपथ का त्याग नहीं करना चाहिये। जो मनुष्य धर्म की रक्षा करता है, धर्म स्वयं उसकी रक्षा करता है। इस सत्य घटना से यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि शक्ति-उपासना में पशुबलि की कोई आवश्यकता नहीं है। धार्मिक साधक इस प्रकार की परीक्षाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। किन्तु लोभी साधक अपने कार्य की सिद्धि हेतु इस परीक्षा में विचलित हो जाता है। महाशक्ति तो जगतमाता हैं। समस्त जीव उनकी एक समान संतान हैं। शाकम्भरी स्वरूप में माता की भांति ये ही समस्त जीव-जन्तुओं का लालन-पालन करती हैं। ऐसी

ममतामयी माता अपनी निस्सहाय पशुसन्तान की बलि किस प्रकार ले सकती हैं ?

परम भक्त रावण ने ब्रह्माजी के प्रकट न होने पर अपने मस्तक को दस बार काटकर ब्रह्मदेव को अर्पित किया था। इसी कठोर बलि के द्वारा ही उन्हें दससिर एवं विश्व अजेयता प्राप्त हुई थी। स्वयं विष्णुजी ने एक कमल की पूर्ति करने के लिये अपना कमलरूपी नयन शिवजी को अर्पित कर दिया था। इस अद्‌भुत बलि से ही उन्हें शिवजी से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ था। राजा बलि ने वामन भगवान के मांगने पर अपना सर्वस्व दान कर दिया था। महर्षि दधीची ने देवराज इन्द्र को युद्ध में विजयी होने के लिये अपनी अस्थियां दान में दे दी थी। सूर्यपुत्र कर्ण ने अपने अमोघ कवच और कुण्डल इन्द्र को दान में दे दिये थे। यही धर्म, त्याग और समर्पण रूपी बलि वास्तविक बलि है। जिनके कारण इनकी कीर्त्ति आज भी अजर अमर है।

अगर जीव वध से समस्त सुख एवं सिद्धियां मिलती तो एक अन्य जाति अपने धर्म के नाम पर प्रत्येक वर्ष असंख्य जीवों की कुर्बानी देती है। उनके पास तो अनेक दुर्लभ सिद्धियां एवं सुख-सम्पत्ति का अमित भण्डार होना चाहिये।

गौओं, पक्षियों, मछलियों, चींटीयों, कुत्तों एवं अन्य मूक जीवों की सेवा करने से ग्रहों को शान्त कर लाभ एवं पुण्य प्राप्त करने का

विधान शास्त्रों में हैं। तो फिर इनकी निर्ममता से हत्या करने से कोई सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है?

सनातन धर्म त्याग, प्रेम, दया, सेवा, समर्पण एवं अहिंसा रूपी दिव्य स्तम्भों पर विद्यमान है। फिर इसमें निर्दोष जीवों की हत्या का समावेश किस प्रकार हो सकता है? जिस तंत्र या प्रयोग को गीता, विशिष्टतंत्र, महापुराण, वेद एवं स्वधर्म स्वीकार नहीं करता हैं, वह तंत्र या प्रयोग सर्वदा अनुचित ही कहा जायेगा। अपने पाप पुण्यरूपी पशु को ज्ञान की खड्ग से मारकर जो योगी अपने शुद्ध मन को निर्विकार परब्रह्म में विलीन कर देता है, वही सच्चा मांसाहारी है। जो साधक अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार युक्त पशुओं को विवेक एवं ज्ञान रूपी खड्ग से मारकर उनका भक्षण करे एवं दूसरे लोगों को सुख पंहुचाये, वही सच्चा बुद्धिमान साधक है।

शास्त्रों में पंचमकार का आध्यात्मिक स्वरूप इस प्रकार हैं-

मद्य- निर्विकार, निरन्जन परब्रह्म के विषय में योगसाधना द्वारा जो प्रमदन-ज्ञान उत्पन्न होता है, उसी को मद्य कहते है।

मांस- जो वाक्-संयमी मौनी योगी है, जो मनुष्य अपने समस्त कर्मों को निष्कल परब्रह्म में लीन कर देता है वही वास्तव में मांस साधक है।

मत्स्य- गंगा और यमुना शरीरस्थ इडा और पिंगला नाड़ी का वास्तविक नाम है और इनमें निरन्तर बहने वाले श्वास-प्रश्वास ही दो मत्स्य हैं। जो मानव प्राणायाम द्वारा इन श्वास-प्रश्वास को रोककर कुम्भक करते हैं, वे ही सच्चे मत्स्यसाधक हैं।

मुद्रा- सहस्त्रदल महापद्म में मुद्रित कर्णिका के भीतर पारद की आत्मा का निवास है। यद्यपि उसका तेज करोड़ो सूर्यों के समान है, परन्तु स्निग्धता में वह करोड़ो चन्द्र तुल्य है। यह परम पदार्थ अतिशय मनोहर तथा कुण्डलिनी शक्ति समन्वित है। जिसके अन्तर में यह ज्ञान उदय हो जाता है, वही वास्तविक मुद्रासाधक हैं। सत्संग से मुक्ति और कुसंग से बन्धन होता है। इस भाव को समझकर कुसंग का त्याग करने का नाम ही मुद्रा है।

मैथुन- शिव का कथन है- हे शिवे! सहस्त्रदल-पद्मोपरि बिन्दु में जो कुण्डलिनी का मिलन है, वही यतियों का परम मैथुन है। यह रहस्य बड़े-बड़े ज्ञानियों के लिये गोपनीय है। योगियों, यतियों और ज्ञानियों का मैथुन सर्वथा गोपनीय तथा परमानन्द शुद्ध चेतन ब्रह्मशक्ति को जाग्रत करने वाला होता है। भैरवयामल में स्पष्ट लिखा हैः- परमानन्द को प्राप्त करने वाली अति सूक्ष्म रूपी सुषुम्ना नाड़ी है। वही योगियों के आलिंगन करने योग्य परमसुन्दरी नारी है। न कि कान्ता, मानवी, सुन्दरी या वेश्या। सुषुम्ना के सहस्त्रार चक्र के अंतर्गत परब्रह्म के साथ संयोग का

नाम ही मैथुन है। स्त्री की मल मूत्र स्वरूप योनि के साथ कदापि नहीं। विश्वबन्ध योगीजन सुखमय वनस्थली आदि में ऐसे ही संयोग को प्राप्त कर परमानन्द प्राप्त करते हैं।

और अन्त में इन शब्दों के साथ विदा लेते हुएः- ''काली साधना निःसन्देह कठिन साधना है। मैं इसका अधिकारिक विद्वान या ज्ञाता नहीं हूं। अपनी क्षमता, ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर यह अध्याय आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। फिर भी उपासकों को अपनी ज्ञान एवं बुद्धि के द्वारा लाभालाभ पर विचार कर इस विषय के किसी सुयोग्य गुरु से परामर्श करके ही काली-साधना में प्रवेश करना चाहिये। माता काली सब को सतमार्ग की ओर प्रेरित करे। इसी प्रार्थना के साथ जय महाकाली।''

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana